* श्रीगणेशाय नमः *

वृहत् श्रीचित्रकूट माहात्म्यम्

लेखक एवं संगृहीता—

महात्मा श्रीरामलखन शरण जी

श्री प्रमोदवन चित्रकूट धाम

श्रीमती कमला भार्गव द्वारा

तेजकुमार-प्रेस (प्रा०) लि०, लखनऊ में मुद्रित

चतुर्थावृत्ति ३०००] सन् १९८८ ई० [

T.K.B.D.
Lko.
Rs. 7/=00

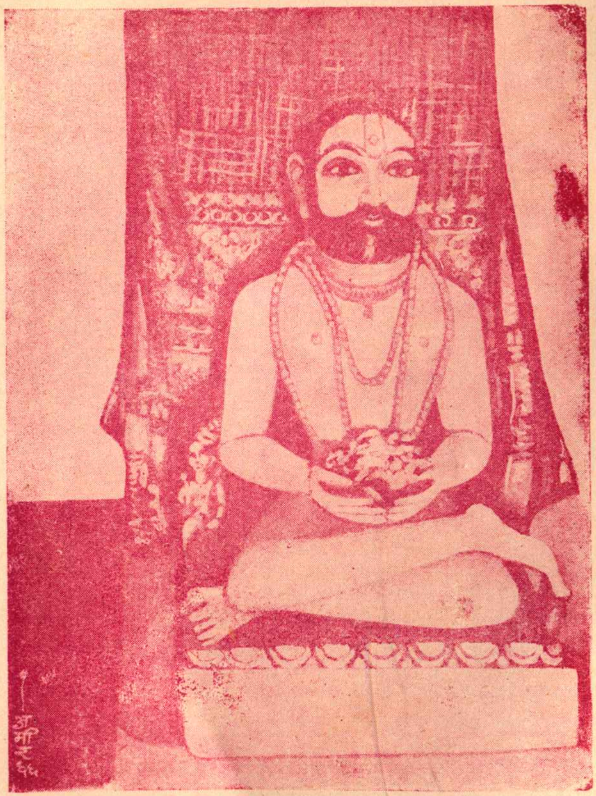

श्री १००८ श्रीमद्राम सखेन्द्र निध्याचार्य जी महाराज
आविर्भाव काल, चैत्र शुक्ल ९, सं० १७५६
परमपद काल, आश्विन शुक्ल ७, सं० १८४२

श्रीसीताराम चरण कमलेभ्यो नमः

प्रस्तावना

बड़े हर्ष का विषय है, जो कि श्री भगवान की असीमानुकम्पा से आज बृहत् श्री चित्रकूट माहात्म्य का यह चतुर्थ संस्करण बहुत ही सुन्दर ढङ्ग से प्रकाशित हो सका है।

इसके लेखक महोदय महात्मा श्री रामलखन शरण जी महाराज को परम धन्यवाद है, जिन्होंने श्रीकिशोरी जी की कृपा से अपने अथक परिश्रम के द्वारा इसे सर्वोपयोगी बनाने का श्रेय प्राप्त किया है।

इस पुस्तक में श्री चित्रकूट का माहात्म्य तथा उसके प्रायः सभी गुप्त-प्रकट स्थलों का गद्यपद्यात्मक पृथक्-पृथक् सुन्दर वर्णन है।

इसके अतिरिक्त पुस्तक में श्री राम सखेन्द्र जी महाराज का जीवन चरित तथा उनके भावावेश के पदों के समेत ग्रन्थ कर्ता श्री राम लखन शरण जी महाराज के भी भाववर्द्धक अनेक पदों का सङ्कलन है। आशा है इस पुस्तक के द्वारा उपासक तथा यात्रियों का बड़ा ही उपकार होगा।

लखनऊ के प्रमुख नागरिक स्व० तेजकुमार भार्गव जी ने अपने सुप्रसिद्ध प्राचीन प्रेस द्वारा इस पुस्तक को प्रकाशित करवाकर जनता का महान उपकार किया है।

इस पुस्तक के सम्पादन तथा संशोधन आदि कार्यों में जो कुछ टियाँ रह गयी हों उन्हें लेखक महानुभाव तथा पाठक जन अपनी रता से कृपया क्षमा प्रदान करके सुधारने का कष्ट स्वीकार करेंगे।

विनीत—

सम्पादक

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीसीतारामाभ्यां नमः ॥

वृहत् श्रीचित्रकूट माहात्म्यम्

भूमिका

रामरत्नमहं वन्दे चित्रकूटपतिं हरिम् ।
कौशल्याभक्तिसम्भूतं जानकीकण्ठभूषणम् ॥
(श्रीरामस्तवराजः)

श्रीचित्रकूट माहात्म्य लिखने में श्रीसीतारामजू की कृपा को ही मूल समझना चाहिये जैसा श्रीगीताजी में श्रीभगवान का वचन है—

यथा:—

"निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् !"

मुझमें न विद्या है, न भक्ति आदि कोई साधन ही परन्तु कामं ददातीति कामदः । श्रीकामदानाथ का ऐसा विलक्षण प्रभाव है, मैं उन्हीं की शरण में हूँ । श्रीचित्रकूट का अर्थ दो प्रकार से हो सकता है।

पहिला यह कि जहाँ जाने से चित्त शान्त होकर प्रसन्न हो ।

दूसरा चित्रका अर्थ होता है, अनेक प्रकार का और कूटका अर्थ है पर्वत शिखर ।

श्रीवाल्मीकीय श्रीरामायणजी में श्रीराघवेन्द्र सरकार जू कहते हैं—

हे श्रीसीते ! देखो श्रीचित्रकूट पर्वत शिखर कैसे मनोहर हैं ? उनमें कोई नीलमणि रङ्ग का, कोई पीत, कोई अरुण और कोई चाँदी या कञ्चन (सोना) के रङ्ग का चमकता है । इस प्रकार श्री चित्रकूट की महिमा श्रीबाल्मीकीय तथा श्री तुलसी कृत रामायणों में महर्षि श्री

वाल्मीकि जी तथा श्रीतुलसीदास जी महाराज ने विस्तार-पूर्वक वर्णन की है। यथा श्रीमानस-रामायण में—

चौपाई।

चित्र कूट गिरि करहु निवासू * तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू ॥
सुरसरि धार नाउँ मन्दाकिनि * सो सब पातक पोतक डाकिनि ॥

दो०—चित्रकूट महिमा अमित, कही महामुनि गाय।
आइ नहाये सरित वर, सिय समेत दोउ भाय ॥

चौपाई।

चित्रकूट थलु अचल अहेरी * चुकइ न घात मार मुठ भेरी ॥
विबुध विपिन जहँ लगि जग माहीं * देखि राम वनु सकल सिहाहीं ॥
सब सर, सिन्धु, नदी नद नाना * मन्दाकिनि कर करहिं बखाना ॥
शैल हिमाचल आदिक जेते * चित्रकूट यश गावहिं ते ते ॥

दो०—चित्रकूट के विहँग मृग, वेलि विटप तृण जाति।
पुण्य पुञ्ज सब धन्य अस, कहहिं देव दिन राति ॥

(अन्यच्च)

और ठौर जप तप करे, ठाढ़ रहे ब्रत मौन।
चित्रकूट डोलत फिरे, तुलै न तुलसी तौन ॥

(दोहावली)

भव भुअङ्ग तुलसी नकुल, डसत ज्ञान हरि लेत।
चित्रकूट यक औषधी, चितवत होत सचेत ॥
चित्रकूट चिन्ता हरण, आरत जन को चैन।
पाप कटै युग चारिके, वसत कामदा नैन ॥
चित्रकूट महँ रमि रहे, रहिमन अवध नरेश।
जापर विपदा परत है, होत सुखी यहि देश ॥
चित्रकूट सत दिन बसत, सिय रघुनाथ समेत।
राम नाम जप जापकहि, तुलसी अभिमत देत ॥

श्लोक—प्रदक्षिणं गिरेः कृत्वा कोटियज्ञफलं लभेत्।
गृहस्थी ब्रह्मचारी वा वाणप्रस्थोऽथ भिक्षुकः ॥
चित्रकूटसमं नास्ति तीर्थं ब्रह्माण्डगोलके।
यत्र श्रीरामचन्द्रोऽसौ सीतया सहितः सुधीः ॥

(श्रीवृहद्रामायण अ० १ श्लो० १२)

जहाँ वनु पावनो सुहावनो विहँग मृग देखि,
अति लागत अनन्द खेत खूँट सों।
सीताराम राम लखन निवासवास मुनिन को,
सिद्ध साधु साधक सबै विवेक वूट सों ॥
झरना झरत झारि शीतल पुनीत वारि,
मन्दाकिनी मञ्जुल महेश जटाजूट सों।
तुलसी जो राम सो सनेहु साँचो चाहिए तो,
सेइये सनेह सों विचित्र चित्रकूट सों ॥

(कवितावली उत्तरकाण्ड १४१)

सब सोच विमोचन चित्रकूट, कलिहरण करण कल्यानवूट।
तुलसी जो रामपद चहिये प्रेम, सेइय गिरि करि निरुपाधि नेम ॥

(विनय पत्रिका दोहा ९)

राग कान्हरा

अब चित चेतु चित्रकूटहिं चलु !

कोपित कलि लोपित मङ्गल मगु, विलसत बढ़त मोह माया मलु ॥
भूमि विलोकि रामपद अङ्कित वन, विलोकु रघुवर विहार थलु।
शैल शृङ्ग भवभङ्ग हेतु लखु, दलन कपट पाखंड दम्भ दलु ॥ २ ॥
जहँ जन्मे जग जनक जगत पति, विधि हरिहर परिहर प्रपञ्च छलु।
सकृत प्रवेश करत जेहि आश्रम, विगत विषाद भये पारथ नलु ॥ ३ ॥
न करु विलम्ब विचारु चारु मति, वरस पाछिले सम अगिले पलु।
मन्त्र सों जाइ जपहि जो जपि भे, अजर अमर हर अचइ हलाहलु ॥ ४ ॥

राम नाम जप करत नित, मज्जत पय पावन पीवत जलु ।
करिहै राम भावतौ मन कौ, सुख साधन अनयास महाफलु ॥ १ ॥
कामद मनि कामता कलपतरु, सो युग-युग जागत जगती तलु ।
तुलसी तोहिं विशेष बूझिये, एक प्रतीति प्रीति एकै बलु ॥ ६ ॥

सवैया

दूत कहै यम के नर सों, नर देह धरी न करे सत्सङ्गा ।
नहि हरि नाम लियो मुखसों नहिं, तुलसी माल धरी उर अङ्गा ॥
नहि दान करे कबहूँ कर सों नहिं, तीरथ पाँव धरे मति भङ्गा ।
नर देह धरे को कहा फलु है जो, अन्हाई नहीं मन्दाकिनि गङ्गा ॥

(गीतावली श्रीअयोध्या काण्ड)

चित्रकूट कानन छवि, को कवि वरणइ पार ।
जहँ सिय लखन सहित नित रघुवर करहिं विहार ।
क्यों कहौ चित्रकूट गिरि सम्पति, महिमा मोद मनोहर ताई ।
तुलसी जहँ वसि लखन राम सिय, आनन्द अवधि अवध विसराई ॥

श्लोक—दर्शनं चित्रकूटस्य मन्दाकिन्याश्च शोभने ।
अधिकं पुरवासाच्च मन्ये तव च दर्शनात् ॥

(वाल्मीकीय रामायण अ० का० १२ श्लोक)

भावार्थः—हे शोभने सीते ! यहाँ नित्य-निरन्तर श्रीचित्रकूट और श्रीमन्दाकिनी गङ्गा तथा आप का दर्शन होता है अतः मैं श्रीअयोध्या वास की अपेक्षा वनवास को अधिक सुखकर मानता हूँ ।

श्लोक—त्वं पौरजनवद्व्यालानयोध्यामिव पर्वतम् ।
मन्यस्व वनिते ! नित्यं सरयूवदिमां नदीम् ॥ १५ ॥

भावार्थः—हे प्रिये ! आप इस वनके निवासी सर्पों को घर वासी मनुष्यों के समान श्रीचित्रकूट पर्वत को श्रीअयोध्या के तुल्य तथा इस श्रीमन्दाकिनी गङ्गा को श्रीसरयूजी के सदृश समझें ॥ १५ ॥

श्लोक—उपस्पृशंस्त्रिषवणं मधमूलफलाशनः ।
नायोध्यायै न राज्याय स्पृहये च त्वया सह ॥

भावार्थः—हे प्रिये ! आपके साथ इस श्रीचित्रकूट में रहकर श्रीमन्दाकिनी गङ्गा में तीनों काल स्नान करके, मधुर फल-मूल का आहार करता हुआ मैं न तो अयोध्या जाने की इच्छा रखता हूँ और न राज्य पाने की ही ॥ १७ ॥

श्रीभागवत पञ्चम स्कन्ध अध्याय १९ में भी श्री कामदगिरि आदिक शब्द हैं । आदि शब्द का अर्थ श्रेष्ठ का है ।

चौपाई ।

सिय मनु राम चरण अनुरागा * अवध सहस सम वनु प्रिय लागा ॥
महिमा कहिअ कौन बिधि तासू * सुखसागर जहँ कीन्ह निवासू ॥
कहि न सकहि सुषमा जस कानन * जो शतसहस होहिं सहसानन ॥

(श्रीतुलसीकृत रामायण)

कामद जनक लली कर रूपा * चित्रकूट रघुनाथ स्वरूपा ॥

(श्रीमन्नृत्य राघव मिलन रामसखेकृत)

अवध जनकपुर एक समाना * चित्रकूट सियराम सुजाना ॥
इन्ह मँह अन्तर एकहु नाहीं * सत्य कहौ श्रुति मत सब पाहीं ॥

दो०—पढ़े सुने यहि ग्रन्थको सुखी रहे दिन रैन ।
कामदनाथ प्रताप से अन्त जाय हरि-ऐन ॥

(भाषानुवादक कृत)

श्रीचित्रकूट माहात्म्य कई प्रकार के छपे हैं परन्तु उनमें न सम्पूर्ण तीर्थों का वर्णन है न प्राचीन चरित्रों का किन्तु इसमें श्रीचित्रकूट के पूरे रहस्य समेत तीर्थों के नाम वर्णित हैं आशा है, भक्त जन इसको अपना कर लेखक के प्रयास को सफल करेंगे और जो भी चूक हुई हो, उन्हें विज्ञ जन सुधारकर लेखक को क्षमा करेंगे ।

निवेदक :—आ० राम लखन शरण प्रमोदवन, श्री चित्रकूट

श्रीचित्रकूट के प्रसिद्ध तीर्थस्थलों का संक्षिप्त वर्णन ।

श्रीप्रयागराज से पश्चिम की ओर लगभग ८० मील पर श्रीचित्रकूट तथा श्रीकामदगिरि है। वहाँ की विशेष यात्रा श्रीरामनवमी अमावस्या, दीवाली आदि को होती है। श्रीचित्रकूट के श्रीरामघाट से पूर्व ६ मील पर कर्वी स्टेशन है वहाँ से पूर्व में १० मील पर श्रीवाल्मीकि जी का स्थान है। वहाँ से पुनः वापस आकर कर्वी स्टेशन से दक्षिण दो मील पर श्रीगणेश स्थान है, वहाँ से दक्षिण ३ मील पर श्रीसङ्कर्षण नाम पर्वत में श्रीबाँकेसिद्ध स्थान है, वहाँ कुछ चढ़ाई पड़ती है वहाँ से श्रीकोटितीर्थ ३ मील है। उसके पश्चिम में देवाङ्गना तीर्थ १ मील है और वहाँ से श्रीहनुमान धारा ३ मील पड़ता है, वहाँ से उतर कर एक मील पर देवीमन्दिर के पास श्रीकिशोरीजी का चरणचिह्न मन्दिर है। उससे आध मील पश्चिम में श्रीप्रमोदवन है वहाँ से दक्षिण की ओर दो फर्लाङ्ग पर श्रीजानकीकुण्ड पर श्रीयुगलचरणचिह्न हैं। वहाँ से २ फर्लाङ्ग पर श्रीशृङ्गारवन है और वहाँ से आध मील पर श्रीस्फटिकशिला है। वहाँ से ८ मील की दूरी पर श्रीअनुसूयाजी तथा श्रीअत्रिजी का आश्रम है। वहाँ से दक्षिण की ओर से दो मील पर श्रीअमरावती वन है। उससे ४ मील दूर पुष्करणी तालाब है। उससे दक्षिण की ओर ९ मील पर श्रीशरभङ्ग आश्रम है जिसके दक्षिण की ओर ३ मील पर श्रीसुतीक्ष्ण आश्रम है। वहाँ से पुनः १८ मील उत्तर दिशा में वापस आकर श्रीअनुसूया-आश्रम से पश्चिम की ओर ६ मील पर कन्यातीर्थ व मोरध्वज स्थान है। वहाँ से तुरङ्गारण्य पर्वत में श्रीगुप्तगोदावरी गङ्गा १ मील है उससे उत्तर की ओर ६ मील पर श्रीमाण्डव ऋषि का मडका स्थल है। वहाँ से पश्चिम ५ मील पर श्रीवाणगङ्गा हैं और वाणगङ्गा से पश्चिम १६ मील पर कालिञ्जर तीर्थ है वहाँ से नैर्ऋत्य कोण में १४ मील पर श्रीअङ्गिरा कुण्ड, वृहस्पति कुण्ड विख्यात हैं। वहाँ से वापस ईशान कोण की ओर आकर ३५ मील पर मडफा आश्रम से उत्तर एक मील पर पञ्चमुखी

श्रीमहादेवजी हैं। वहाँ से उत्तर मणिपर्वत पर श्रीसीताशय्या है उससे उत्तर की ओर ६ मील पर श्रीभरतकूप है और श्रीभरतकूप से उत्तर की ओर ३ मीलपर श्रीव्यासकुण्ड है उससे ११ मील पर श्रीसूर्यकुण्ड है तथा वहाँ से दक्षिण ८ मील पर श्रीचित्रकूट रामघाट है। पश्चिम में श्रीमत्त-गयेन्द्र महादेवजी तथा यज्ञवेदी स्थान है वहाँ से पश्चिम एक मील पर श्रीकामदगिरिजी हैं जिनकी ४ मील की प्रदक्षिणा है। दक्षिण में श्रीभरत मिलाप से आगे श्रीलक्ष्मण टेकरी है श्रीकामदगिरि से पश्चिम की ओर एक मील पर श्रीरामशय्या स्थान है। श्रीकामगिरि से पूर्व की और श्रीयज्ञवेदी से दक्षिण में श्रीप्रमोद वन है। तथा श्रीजानकी कुण्ड से पश्चिम की ओर श्रीसाकेतनगर नाम का वन है वहाँ पर वालखिल्य मुनि, सनत्कुमार आदि ऋषियों के तपःस्थान हैं। श्रीराघव प्रयाग के पश्चिम में श्रीअक्षयवट है।

तीर्थयात्रा में पालन करने योग्य नियम ।

तीर्थयात्रा में तमाखू, भाँग, गाँजा, अफीम, आदि मादक वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिये। जूता, चट्टी न पहिने। गङ्गा किनारे श्रीदेवमन्दिर के पास, तीर्थपरिक्रमा में, दाहिनी ओर थूकना तथा मल मूत्र त्याग नहीं करना चाहिये ! गङ्गा जल को शौच आदिक काम में लेना निषेध है यदि लेना ही पड़े तो लोटा में लेकर थोड़ा आचमन करके शौच के काम में ले सकते हैं।

प्रथम दिवस आकर श्रीगङ्गाजी को प्रणाम कर वालों को भद्र अर्थात् क्षौरकर्म करवाकर स्नान करना चाहिए पुनः यज्ञोपवीत धारण कर चन्दन तिलक पूर्वक गायत्री अथवा श्रीराम नाम का जप, देव पितरों का तर्पण तथा पिण्ड दान कर ब्राह्मण, वैष्णव, भूखे, दुखी आदि प्राणियों को यथा शक्ति भोजन-वस्त्र अन्न दान, गौदान आदि देकर श्रीकामद गिरि की प्रदक्षिणा प्रारम्भ करनी चाहिये। तीर्थ में जिस प्रकार धर्म बढ़ता है उसी प्रकार अधर्म, यथाः—

काटे सिर बाढ़े बहुत, जिमि तीरथ के पाप ।

(श्रीरामायणजी)

अतः ध्यान रक्खें पृथ्वी में चेण्टी आदिक कोई जीव पैरों से न दबें । तीर्थ में वृथा बात न करें । मौन रहकर श्रीराम नामस्मरण-चिन्तन, भजन कीर्त्तन करते रहें क्योंकि—

"तीरथ अमित कोटि सम पावन ।
नाम अखिल अघ पुञ्ज नसावन" ॥

तीर्थ में एकादशी तथा श्रीरामनवमी इत्यादि का व्रत अवश्य करे । विविध भोजन, तथा अनेक प्रकार के मूल, फल, कन्द इत्यादि नहीं पाना चाहिये । निवास स्थान छोड़नेके पश्चात किसी की वस्तु, विना मूल्य न लेवें । तास, चौपड़ खेलना तथा सिनेमा आदि देखना निषेध है । किसी से हँसी, मजाक, निन्दा आदिक नहीं करनी चाहिये । श्रद्धा, विश्वास, सन्तोष, सत्य, दया, ब्रह्मचर्य्य आदिक नियमों का पालन अवश्य करना चाहिये ।

श्रीकामदगिरि प्रदक्षिणा ।

श्रीरामघाट से चलकर पुनः श्रीराम घाट आने तक श्रीकामद गिरि की साढ़े ६ मील की परिक्रमा है । श्रीराम घाट पर स्नानकर श्रीमत्त-गयेन्द्र महादेवजी का दर्शन दण्डवत स्तुति कर पश्चिम की ओर पुरानी लङ्का में श्रीसीतारामजू का दर्शन करके अक्षयवट का दर्शन करे पुनः विद्यालय से आगे बड़े मन्दिर के बायें मार्ग से श्रीराममोहल्ला होकर श्रीकामद गिरि के उत्तर मुखारविन्द का दर्शन दण्डवत स्तुति आदि करे । श्रीकामद गिरि में श्रीसूर्यगङ्गा श्रीयमुनाजी, श्रीसरस्वतीजी, श्रीशतद्रुमाजी, श्रीचन्द्रभागाजी, श्रीपयस्विनीजी, श्रीविरजाजी, श्रीताम्र-पर्णीजी, श्रीकावेरीजी, श्रीनर्मदाजी, आदि नदियां श्रीप्रयागराज, नैमिषा-रण्य, धर्मारण्य, गोमती, गया, पुरी, वाराणसी, श्रीशैल, केदारनाथ,

बद्रीनाथ, पुष्कर, मानसरोवर, उत्तरमानसरोवर, सप्तसमुद्र, बडवानल-तीर्थ अग्नितीर्थ, इन्द्रदमन, स्वामिकार्त्तिक आदि महातीर्थ, तथा श्रीशालिग्राम अदिक देवता, चौरासी योजन ऊँचे श्रीकामद गिरि का यथा योग्य सेवन तथा वास करते हैं । श्रीकामदनाथ के पूर्व मुखारविन्द का दर्शन तथा दण्डवत प्रणाम, स्तुति आदि करके श्रीभगवान का चरणोदक लेवे । चरणोदक गिरने अथवा एक हाथ से लेने में दोष है अतः बाईं हथेली पर वस्त्र रखकर उसपर रक्खे हुये दाहिने हाथ की हथेली में दो या तीन बार चरणामृत लेवे एकबार नहीं ।

प्रदक्षिणा में कई मन्दिर आते हैं जिनकी इच्छा हो दर्शन करते हुये परिक्रमा करें । पूर्व मुखारविन्द से आगे दक्षिण मुखारविन्द, सुरभिस्थल तथा श्रीभरतमिलाप-मन्दिर का दर्शन करे उस मन्दिरमें श्रीराम, लक्ष्मण, भरत-शत्रुहन जी के चरण चिह्न हैं । उस से आगे बाईं ओर की गली में सीढ़ियों पर चढ़कर श्रीलक्ष्मण टेकरी का दर्शन करे । वह बैकुण्ठ नामक पर्वत अनुमानतः २ फर्लाङ्ग होगा । वहाँ वापस आकर श्रीकामद नाथ जी के पश्चिम मुखारविन्द का दर्शन करके बाजार होकर उत्तर दिशा से पीली कोठी होते हुये श्रीकामद नाथ जी के उत्तर मुखारविन्द का दर्शन करके साष्टाङ्ग दण्डवत् पूर्वक चरणोदक लेवे पुनः वहीं से वापस आकर पुरानी लङ्का के उत्तर की ओर भजनाश्रम होकर श्रीमत्तगयेन्द्र महा-देवजी के दर्शन करते हुये श्रीरामघाट में प्रदक्षिणा समाप्त कर धर्मशाला आदि में उसी दिन विश्राम पूर्वक व्रत करे ।

प्रातः शौचादि से निवृत्त होकर श्रीराघव प्रयाग में स्नान करे जिस प्रकार श्री प्रयागराज के सङ्गम-का महत्व है उसी प्रकार श्रीराघव प्रयाग सङ्गम का । दधिकुल्या, मधुकुल्या, घृतकुल्या, शर्कराकुल्या ये चारों देवगङ्गा हैं । दशाश्वमेध तीर्थ, श्रीगायत्री गङ्गा, सरस्वती गङ्गा, पयस्विनी गङ्गा, श्रीमन्दाकिनी गङ्गा आदि का सङ्गम है । कैलाशघाट भी शङ्करजी का है । पश्चिम में श्रीयज्ञवेदी पर्णकुटी, श्रीतुलसीदासजी की गुफा, श्रीमत्तगयन्द महादेवजी का दर्शन करके श्रीबाला जी, बड़े हनुमान

का दर्शन करे तत्पश्चात् श्रीरामघाट से पूर्व बिजावर राजमन्दिर में श्रीसीतारामजू का दर्शन करे पुनः श्रीछबिकिशोरजी का दर्शन करके श्रीआचारीजी आदि के स्थान में श्रीसीतारामजू का दर्शन करे। श्रीरामघाट से पूर्व कोटि तीर्थ होकर श्रीहनुमानधारा आदि की यात्रा बारह १२ मील की है।

पूर्व दिशा की यात्रा।

श्रीरामघाट से पूर्व ६ मील दूर सङ्कर्षण पर्वत पर कोटि तीर्थ कुण्ड में स्नान करके श्रीशंकर-पार्वतीजी का दर्शन करे वहाँ एक कोटि मुनीश्वर श्री युगल सरकार के दर्शनार्थ तप करते थे, उनके भाव से प्रसन्न हो भगवान श्री राम जू सरकार ने उतने ही रूप धारण करके एक साथ दर्शन प्रदान कर उन्हें अभीष्ट सुख प्रदान करने की कृपा की थी। इसमें स्नान करने से कोटि तीर्थों के स्थान तथा अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है इसी से इसको कोटि तीर्थ कहते हैं वहाँ अग्नि तीर्थ, सूर्य तीर्थ, चन्द्र तीर्थ आदि अनेक तीर्थ हैं, वहाँ पर श्रीसरस्वती नाम की गङ्गा तथा श्री शङ्कर जी का मन्दिर है, उस स्थल का नाम सिद्धाश्रम भी है वहाँ से ४ मील पर वायु अग्नि, वरुण, चन्द्र सूर्यादि पञ्च तीर्थ (कुण्ड) हैं पुनः मणिकर्णिका नाम तीर्थ है वहाँ से पूर्व श्री ब्रह्म सरोवर तीर्थ है वहाँ से दक्षिण में श्रीसुग्रीव तीर्थ और आगे यमदग्नि तीर्थ है जिसका नया नाम श्री सीता रसोई है, उस से नीचे पर्वत के मध्य सङ्कर्षण तीर्थ में श्रीहनुमान जी का दर्शन कर दण्डवत् स्तुति आदि करे। वहाँ पर पाताल गङ्गा श्रीहनुमानजी की दक्षिण भुजा पर गिरती है। वहाँ की विशेष यात्रा वैशाख-पूर्णिमा तथा मङ्गल, चतुर्दशी, श्रीरामनवमी, दीवाली आदि को होती है। वहाँ से सीढ़ी उतर कर एक मील पर दुर्गा देवी से उत्तर की ओर समीप में ही श्रीकिशोरी जी के प्रत्यक्ष चरणचिह्नों का दर्शन करे। वहाँ से सीधे नया गाँव हो कर जाने से श्रीरामघाट सङ्गम की पूर्ण परिक्रमा नहीं

होती है अतः वहाँ से आध मील पश्चिम श्रीप्रमोदवन होकर श्रीराम घाट आकर प्रदक्षिणा समाप्त करनी चाहिये। इति

दक्षिणदिशा की यात्रा बिधि।

श्रीप्रमोद वन होकर श्रीअनुसूयाजी तक १० मील की यात्रा है। श्रीरामधाम में श्रीसीतारामजू का दर्शन करके पश्चिम की ओर केशव गढ़ के आगे श्रीदास हनुमान का दर्शन करे पुनः श्री प्रमोदवन फाटक के प्रवेश कर भीतर दाहिनी दिशा में श्रीराम सखेन्द्र जू के स्थानों में श्रीप्रमोदवन विहारिणी विहारी जू के दर्शन करके उनकी प्रदक्षिणा, दण्डवत् प्रणाम् स्तुति आदि करे। यह प्राचीन प्रमोदवन श्रीसीतारामजू का नित्य विहार स्थल है।

प्रमाणः—

भूमि विलोकि रामपद अङ्कित वन विलोकु रघुवर विहार थलु।
(श्रीतुलसीकृत विनयपत्रिका)

चित्रकूट, वन कुन्ज में विहरत दशरथ लाल।
राम सखे प्रण बाँधि के बसे तो होइ निहाल॥
(श्रीराम सखे कृत दोहावली)

वन प्रमोद नित सिय पिय आवत * सुमन वाटिका छबि दरशावत॥
(श्रीराम विहारी शरण)

वन प्रमोद विहरत रघुवीरा * सीता सहित लिये धनुतीरा॥
(अनुवादक)

प्रमोदयतीति प्रमोदः प्रमोद कहते हैं आनन्द को अतः जिस वन में अति आनन्द हो उसका नाम प्रमोदवन है। वहाँ पश्चिम में श्रीशालिग्राम कूप है जिसमें श्रीरामसखे जू के श्रीशालिग्राम जी कूद गये थे, वह प्राचीन कूप स्थान है। वहाँ से ईशान कोण में नागौधराज मन्दिर में श्रीराम लक्ष्मण जानकी जू के दर्शन करे। वहाँ से उत्तर रीवाँ नरेश

श्रीमान विश्वनाथ जी के मन्दिर में श्रीलक्ष्मीनारायण जू का दर्शन तथा दण्डवत् स्तुति आदि करे। वहाँ पुत्रदा नाम का वृक्ष है श्रीजानकी कुण्ड—प्रमोदवन के पूर्वद्वार से निकलकर दक्षिण दिशा में श्रीमन्दाकिनीगङ्गा के किनारे से गौघाट होकर श्रीजानकी कुण्ड जावे, वह श्रीसीतारामजू महाराज का दिव्य जल क्रीड़ास्थल है। वहाँ जल के मध्य की शिला में श्रीजानकी जू के तथा तट में श्रीरामजू के चरण चिह्नों का दर्शन है। इसमें शङ्का करनी व्यर्थ है जिस समय श्रीसीता-रामजू श्रीचित्रकूट आये थे उस समय पत्थर तथा पृथिवी मोम व दुग्ध फेन के समान सुकोमल हो गयी थी अतः श्री युगल सरकार के चरणचिह्न पत्थरों पर उभर आये थे उनमें से कुछ लोक कल्याणार्थ प्रभु की इच्छा से श्रीजानकी कुण्ड, स्फटिकशिला श्रीभरतमिलाप आदि स्थानों में अभी तक प्रकट हैं। चरण चिह्नों का दर्शन कर पश्चिम में श्रीसीतारामजू का दर्शन करके ऊपर कूप के पास श्रीरामसखे जू के वासज मन्दिर में श्रीसीतारामजू का दर्शन कर उत्तर में श्रीबुधराम दासजी के बड़े स्थान में श्रीसीतारामजू का दर्शन करे। दक्षिणदिशा में श्रीलक्ष्मण घाट है जिसको गऊघाट कहते हैं, वहाँ से निकट हंस-तीर्थ है वहाँ हंस स्वरूप श्रीभगवान प्रकट हुये थे। वर्तमान समय में उसको "मगरा" कुण्ड कहते हैं।

श्रृङ्गारवन—मगराकुण्ड से पश्चिम में श्रृङ्गारवन है जहाँ श्रीरामजू सरकार ने श्रीकिशोरीजू का श्रृंगार किया था यह कथा श्रीरामायण जू में प्रसिद्ध है यथाः—

चौपाई।

एक बार चुनि कुसुम सोहाये * निजकर भूषण राम बनाये ॥

स्फटिकशिला—श्रृंगारवन से दक्षिण में आध मील पर स्फटिकशिला है वहाँ श्रीहंस भगवान ने स्नान किया था और उसी स्थान पर श्रीरामजू के बल की परीक्षा करने के लिये इन्द्रका पुत्र जयन्त कागरूप धर कर आया था।

चौपाई।

सुरपति सुत धरि वायस वेषा * शठ चाहत रघुपति बल देखा ॥

यथा

जिमि पिपीलिका सागर थाहा * महामन्दमति पावन चाहा ॥

(श्रीरामायण)

वहाँ पर भी श्रीसीतारामजू के चरणचिह्न हैं।

श्रीअनुसूयाजी।

स्फटिक शिला से दक्षिण की ओर आठ मील पर श्रीअनुसूयाजी तथा श्रीअत्रिजी का आश्रम है वहीं से श्री मन्दाकिनी गङ्गा प्रकट हुई हैं वे स्वर्ग गङ्गा हैं * श्रीभगीरथ जी के तप से प्रसन्न हो भगवान श्रीशङ्करजी ने अपनी जटा से तीन बूंद गिराये थे। उन्हीं में से तीन गङ्गायें प्रकट हुईं एक गङ्गा स्वर्ग लोक गयीं दूसरी श्रीसगर पुत्रों का उद्धार करने के लिये मृत्युलोक में पधारीं और तीसरी पाताल गङ्गा हैं जो श्रीहनुमान धारा में प्रकट हैं।

श्रीअत्रिजी तथा श्रीअनुसूयाजीके तप से प्रसन्न होकर श्रीब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों देव चन्द्रमा, दत्तात्रेय तथा दुर्वासाजी के रूप में उनके पुत्र बने हैं वहाँ श्रीगङ्गाजी को दण्डवत् प्रणाम कर स्नान-पूजा आदि करे। वहाँ पर श्रीहनुमानजी, श्रीअनुसूयाजी तथा श्रीअत्रिजी आदि के दर्शन हैं। वहाँ से दक्षिण की ओर समीप में ही जलमें दरिद्र मोचन, पापमोचन एवं ऋणमोचन नाम की शिलायें हैं। वहाँ से ढाई मील दक्षिण की ओर अमरावती का श्रेष्ठ वन है वहाँ से वैतरणी नदी होकर २ मील पर श्रीऋषभ देव तीर्थ है, वहाँ पर श्रीरामरज तथा श्रीजानकी रज दोनों प्रकार के चन्दन मिलते हैं उस तीर्थ के पास श्रीबद्री तीर्थ है उस के दक्षिण में पुष्करणी नाम का (तालाब) तीर्थ

*मन्दाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्णदी स्वर्गदीर्धिका इत्यमरः

है, जहाँ पर इन्द्र ने वृत्रासुर की हत्याजनित पाप के निवारणार्थ यज्ञ किया था। वहाँ से दक्षिण ९ मीलपर श्रीशरभङ्ग आश्रम है वहाँ श्रीगङ्गा कुण्ड पर स्नान करके श्रीरामजानकीजू का दर्शन करें। वहाँ से ३ मील दक्षिण में श्री सुतीक्षण मुनि का आक्षम है।

पश्चिम दिशा की यात्रा।

श्रीसुतीक्ष्ण आश्रम से १८ मील दूर श्री अनुसूयाजी के आश्रम में वापस आकर ५ मील पश्चिम की ओर श्री मोरध्वज स्थान का दर्शन करे।

गुप्तगोदावरी।

श्री मोरध्वज स्थान से एक मील दूर गुप्त गोदावरी गङ्गा हैं, जहाँ पर रोशनी लेकर भीतर जाते हैं, यह स्थान श्री चित्रकूट से १० मील और श्रीअनुसूयाजी से ६ मील दूर है। वहाँ पर श्रीशङ्करजी का दर्शन और तुङ्गारण्य पर्वत है। श्रीमोरध्वज से दक्षिण सूर्य कुण्ड है उसके पास दण्डक तीर्थ है। गुप्तगोदावरी के दक्षिण में श्यामसूत्र तीर्थ है। वहाँ से उत्तर वेदारण्यपर्वत में वृहस्पति जी का तप स्थान है। उसके समीप में ही श्रीरामसरोवर है जिसको श्रीरामचन्द्र जू ने वाण मारकर प्रकट किया था अतः उसको श्रीरामगङ्गा कहते हैं वहाँ से निकट देवनामक पर्वत में श्रीशङ्करजी का दर्शन हैं। पर्वत के भीतर श्रीकपिलजी का तीर्थ है वहाँ से आगे श्रीकालिञ्जर तीर्थ है। जहाँ पर दूसरा कोटि तीर्थ हैं, जिनका सेवन इन्द्रादि देवता करते हैं। कालिञ्जर के मध्य में श्रीमन्दाकिनी गङ्गा हैं। वहाँ श्रीनीलकण्ठ महादेवजी का दर्शन है। पूर्व दिशा में श्रीसरस्वती नाम की गङ्गा हैं। वहाँ से पश्चिम १२ मील पर श्री अङ्गिराकुण्ड, श्रीवृहस्पतिकुण्ड नाम से विख्यात दो कुण्ड हैं उनके पास सूर्य कुण्ड, श्रीरामकुण्ड तथा मार्कण्डेय-आश्रम एवं श्रीब्रह्मसरोवर आदि कई तीर्थ हैं।

उत्तरदिशायात्रा-विधि।

मार्कण्डेय आश्रम से वापस ३४ मील आकर पूर्व दिशा में श्रीमण्डप नामक पर्वत में श्रीमहादेवजी का दर्शन करे। वहाँ पापमोचन कुण्ड है जो मडका नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ माण्डव ऋषि ने तप किया था उत्तर दिशा में श्रीभरतकूप, सूर्यकुण्ड आदि की यात्रा २० मील की है। माण्डव आश्रम से उत्तर शिवकुण्ड है उससे उत्तर एक मील पर पञ्च-मुखी महादेवजी का दर्शन है उत्तर में श्रीदेवीजी का स्थान व सरोवर है, वहाँ से उत्तर मणिकूट नामक पर्वत के मध्य में श्रीसीताशय्या है और उस के उत्तर में श्रीभरतकूप में रविवार को विशेष करके श्रीसीतारामजू के दर्शन करे। उससे उत्तर ३ मीलपर द्रोणाचल पर्वत के पास श्रीब्रह्म-कुण्ड व व्यासकुण्ड है, वहाँ से उत्तर १ मीलपर वज्रनामक पर्वत है वहाँ से श्रीमन्दाकिनी गङ्गा पश्चिमाभिमुख बही हैं। यहाँ सूर्यनारायण तीर्थ है जिसे सूर्यकुण्ड भी कहते हैं। उसके उत्तर में ब्रह्मसरोवर, मानस नाम का तीर्थ है वहाँ से श्रीचित्रकूट ८ मील दक्षिण है। श्रीचित्रकूट से पूर्व १६ मील पर ब्रह्माण्डभेदक तीर्थ हैं। वहाँ श्रीमहादेवजी का दर्शन है और उसे ब्रह्माह्लाद भी कहते हैं। सेमरिया ग्राम के पास इमिली पर्वत है। श्रीचित्रकूट से पूर्व १६ मीलपर श्रीवाल्मीकि-आश्रम है।

श्रीकामदगिरि से उत्तर पूर्वी तीर्थों का वर्णन।

श्रीकामदगिरि से उत्तर में सम्भेद नामक दुर्गा पर्वत पर श्रीदुर्गा देवी का मन्दिर है, वहाँ से पश्चिम में पुण्यजन नामक पर्वत है तथा उससे उत्तर में जटायु तीर्थ है और उसके उत्तर में श्रीमन्दाकिनी गङ्गा १०० धारा बही हैं। वहाँ सुदर्शनचक्र नामक तीर्थ है, जिसमें आगे सुभद्र नाम कुण्ड है और उसके दक्षिण में भद्र नाम तीर्थ है। वहाँ से वायव्य कोण में मणिभद्र नाम का तीर्थ है, श्रीबाँकेसिद्ध नामक स्थान में श्रीलक्ष्मीनाथ नव निद्धियों सहित निवास करते हैं वहाँ पद्म, महापद्म, कुन्द, मुकुन्द आदि तीर्थ जल में अवस्थित हैं वहाँ से उत्तर दिशा में श्रीवशिष्ठजीका

तपःस्थान है और उनके पास श्रीवामदेवजीका स्थल है एवं उसके निकट श्रीलोमशजी का तपः स्थान है तथा उनके समीप में श्रीगौतमजी का तपः स्थल है। श्रीवशिष्ठजी के स्थान से पूर्व में श्रीगणेशजी का कुण्ड है वहाँ से पूर्व में आर्व ऋषि का तपःस्थल व गोमान नामक पर्वत है उसके दक्षिण में कामधेनु स्थान है जिसके दक्षिण भाग में कामदेव तीर्थ है, उस से पश्चिम में मण्डल नामक स्थान है और उस से उत्तर में श्रीशीतला देवी का आश्रम है, उनसे उत्तर की ओर समीप में ही श्रीगौरीदेवी हैं। मन्दिर के निकटही सरोवर हैं। वहाँ से उत्तर में श्रीयोगेश्वरी देवी का स्थान है। उसके पूर्व में श्रीपरशुरामतीर्थ है और उसके नैऋत्य कोण में दालभ्य ऋषि का तपः स्थान है। वहाँ से ईशान कोण में श्रीसरस्वतीजी का तपः स्थल है। और वहाँ से दक्षिण में श्रीसावित्रीजी का तपः स्थान है। उसके उत्तर भाग में श्रीसुतीक्ष्ण आश्रम है तथा उनसे एक योजन पर श्रीअगस्त्यजी का प्रसिद्ध आश्रम है।

श्रीकामदगिरि तथा श्रीमन्दाकिनी के अन्तर्गत तीर्थों का वर्णन।

श्रीरामशय्याः—

श्रीकामदगिरि के वायव्य कोण में श्रीरामशय्या है उसके समीप उत्तर में श्रीगोवर्धन नामक पर्वत में श्रीवशिष्ठजी का आश्रम है उसके समीप, विचित्र नामक शिखर पर श्रीभृगुजी का तपः स्थल है, वहाँ से पूर्व स्वर्णशिखर पर श्रीपुलस्त्य ऋषि का तपः स्थान है। श्रीयज्ञवेदी के पास श्रीपयस्विनीजी के तटपर श्रीवाल्मीकिजू का तपः स्थान है। पूर्व दिशा में श्रीचमनऋषि का, अग्नि कोण में गोमान शिखर पर श्रीअगस्त्य जी का और दक्षिण दिशा में माणिका शिखर पर श्रीगर्गाचार्य ऋषिका तपःस्थान है। नैऋत्यकोण में श्रीलक्ष्मणपहाड़ी के पास ही ब्रह्माचल शिखर में श्रीसुराचार्य ऋषि का तपःस्थल है।

इति श्रीचित्रकूट सम्पूर्ण संक्षिप्त यात्रा वर्णन
समाप्तम्।

कवि-परिचय

चौपाई।

रीवाँ के दक्षिण दिशि दूरी * राम नगर जानहु सुख भूरी ॥
तहँ रह पिता जन्म अस्थाना * विप्र तिवारी विज्ञ सुजाना ॥

दोहा—रामनगर लघु शहर है, बसा नदी के तीर।
देखत आमन की छटा, पुलकित होत शरीर ॥

रीवाँ राज्य के दक्षिण ३० मील पर श्रीरामनगर में श्रीरामलषण शरण जी के पिताजी का जन्म स्थान था। पिताजी श्रीरामनगर से पश्चिम ४ मील पर स्थित ग्राम बिजौरा में काश्तकारी करते थे। वहीं पर श्रीरामलषण शरण का जन्म सम्वत् १९८८ कार्त्तिक शुक्ला पञ्चमी शुक्रवार को तिवारी गुरौलिहा ब्राह्मण के गृह में हुआ था। ७ साल के बाद पिताजी की साकेत यात्रा हो गयी। पुनः बड़े भाई ने कुछ विद्याध्ययन कराया। लगभग १४ वर्ष की अवस्था में प्रारब्धवश शारीरिक रोग हो गया तब रीवाँ गये किन्तु वहाँ भी डाक्टरों ने दवा नहीं की अतः घर चले आये। तब माता तथा भाई ने कहा कि, श्रीभगवान की सेवा-पूजा करो तो शरीर निरोग हो जायगा, यह सुनकर वे श्री शालिग्रामजी की पूजा-सेवा करने लगे, शरीर अच्छा हो गया।

सत्य है श्रीरामजी के चरणामृत से ही सर्व व्याधि शान्त हो जाती है यथा—

श्लोक—अकालमृत्युहरणं सर्व - व्याधि - विनाशनम्।
श्रीरामपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥

कुछ दिनों के बाद श्रीचित्रकूट प्रमोदवन से श्री १०८ स्वामी श्रीराम कुमार शरणजी पधार कर सम्वत् २००८ आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा को उन्हें श्रीराम मन्त्र तथा कण्ठी तिलक आदि दिये। श्रीराम लखन शरणजी कुछ दिन घर से अलग वहीं रहने लगे पुनः कार्त्तिक

में श्रीचित्रकूट आकर श्रीमहाराजजू के दर्शन कर पुनः घर चले गये। श्रीमहाराजजूकी साकेत यात्रा अगहन सुदी ११ सम्वत् २००८ में रीवाँ के पास खजुरी स्थान में हुई। वहाँ श्रीरामलीला होती थी। श्रीमहाराजजी वहाँ निमन्त्रण में गये थे। एकादशी के दिन मध्याह्न के समय श्रीराम विदाई की झाँकी होती थी उसी समय वे सन्त समागम में भजन करते-करते साकेत पधार गये। श्रीमहाराजजू का जन्म रीवाँ राज्यस्थ महसूवाँ गाँव के पड़रहा ब्राह्मण के गृह का था। वैशाख में श्रीदादागुरु महन्त श्री १०८ श्रीरामललाशरणजी महाराज श्रीमद्भागवत की कथा सुनाने के लिये श्रीरामलखनशरणजी के ग्राम में पधारे थे तभी उनका धनुषवाण आदिक पञ्च संस्कार किये थे। घरके पासही श्रीराम लखन शरणजी महाराज अपने माता-पिताकी सम्पत्ति द्वारा सन्त निवास, व श्रीहनुमानजी का मन्दिर बनवा कर सम्वत् २०१३ कार्त्तिक बदी १३ को श्रीचित्रकूट आये। तब चाचा गुरू श्रीसीतारामशरणजू ने आज्ञा दी कि, स्थान में रहो तो हम व श्रीसन्तशरणजी भी रहेंगे। पहिले वे श्रीजानकी कुण्ड पर रहते थे, श्रीरामलखनशरणजी ने कहा—जो आज्ञा तदनुसार वे स्थान में रहकर श्रीसीतारामजी की सेवा व रसोई करने लगे। कुछ दिन बाद उन्होंने जब श्रीवृहद चित्रकूट माहात्म्य पढ़ा, तब यह इच्छा हुई कि यदि यह भाषा में होता तो, बहुत ही उपकार होता। श्रीरामजी की प्रेरणा से उन्हें यह पद स्मरण हो आया और रात-दिन इसी के चिन्तन में तल्लीन हो गये।

पदः—

खेलन चलिये आनँद कन्द।
भरत लखन रिपुदमन खड़े हैं बाल सखा लिये संग॥
साँझ भई अब देर न कीजै होइ खेल रस-रंग।
वन प्रमोद में नित प्रति खेलत रसिक सखन के संग॥
नर्म सखा सब आइ जुटे हैं दीजै परमानन्द।
राम-लखन अब खड़े पुकारत करहु कृपा श्रीरंग॥

पुनः उन्होंने श्रीरामजू की प्रेरणा से श्री चित्रकूट माहात्म्य दोहा-चौपाइयों में लिखना प्रारम्भ कर दिया, किन्तु कुछ प्रारब्ध-वश शारीरिक रोग हो गया, अतः लिखना भी स्थगित हो गया। जब वे पुनः स्वस्थ हुये, श्रीराम जू की मङ्गलमयी प्रेरणा से उन्होंने पुनः माहात्म्य लिखना प्रारम्भ किया और वह श्रीयुगल सरकार की भक्त भाव पूरिणी कृपा द्वारा सं० २०१८ ज्येष्ठ शुक्ला पुरुषोत्तमी तृतीया भौमवार को सम्पूर्ण हो गया।

जिन्होंने लेखक को लेख में सहायता पहुँचाई और मदद की है, लेखक उन वैष्णव श्री जगमोहनदास जी तथा श्री विष्णुदासजी को धन्यवाद देता है। इति शुभम्

सम्पादक—

—:०:—

वन्दना

श्रीसीतारामभ्यां नमः

श्लोक—नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम् ।
पाणौ महाशायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥
सुवर्णकूटं रजताभिकूटं माणिक्यकूटं मणिरत्नकूटम् ।
अनेककूटं वहुवर्णकूटं श्रीचित्रकूटं शरणं प्रपद्ये ॥

दोहा—श्रीगणपति पद वन्दि के, पवनतनय चित लाय ।
चित्रकूट यश वर्णऊँ, कीजै आपु सहाय ॥ १ ॥
व्यास कपिल आदिक मुनिन, विनय करूँ कर जोरि ।
रामचरण रति नित बढ़ै, भव-बन्धन दो छोरि ॥ २ ॥

चौपाई ।

बन्दौं गुरु पद पद्म प्रकाशा * जासु कृपा यह बढ़्यो हुलासा ॥
बन्दौं अज, शुक, नारद चरणा * अत्रि, अगस्त्य मोह भ्रम हरणा ॥
वाल्मीकि सनकादिक ज्ञानी * गिरा दिनेश महेश भवानी ॥
चरण-कमल बन्दौं धरि माथा * चाहत करन धाम गुण-गाथा ॥
तुलसी दास आदि कवि जेते * चरण कमल बन्दौं सब तेते ॥
बन्दौं मातु-पिता के चरणा * चारो वेद महीधर धरणा ॥
बन्दौं रघुवर कृष्ण अनूपा * वामन श्रीनरसिंह स्वरूपा ॥
बन्दौं भूसुर चरण सुहाये * संशय शोक हरण यश गाये ॥

दोहा—बन्दौं भूसुर बृन्द सब, सन्त महन्त अनन्त ।
जिनकी कृपा प्रताप से, भाषा लिखौं तुरन्त ॥ ३ ॥

श्लोक—श्रीसीतानाथसमारम्भां, माध्वाचार्यसुमध्यमाम् ।
रामसखेन्द्रपर्य्यन्तां, बन्दे गुरुपरम्पराम् ॥

चौपाई ।

बन्दौं राम सखे के चरणा * महामोह पातक तम हरणा ॥

जयपुर जन्म भूमि अस्थाना * लीला लखन बन्यौ जस जाना ॥
कीन्ह द्वैत मत पुष्ट बखानी * जो सुनि होइ मोह भ्रम हानी ॥
बन्दौं श्रीमहाराज सुशीला * चित्रकूट की बरणौं लीला ॥
बन्दौं ज्ञाननिधी के चरणा * अवधशरण भये जिनके शरणा ॥
बन्दौं अवध शरण के चरणा * सख्य सिन्धु जिन बहु बिधि बरणा ॥
बन्दौं मधुर अली महराजा * भक्ति मूर्ति मानत सब राजा ॥
बन्दौं राम भुवन के चरणा * रामकुमार लीन्ह जिन शरणा ॥

दोहा—श्रीमद राम कुमार पद, बन्दौं वारंवार ।
दीन जानि कीजै कृपा, मिलें युगल सरकार ॥ ४ ॥
राम बिहारी शरण पद, बन्दौं दोउ कर जोरि ।
बन प्रमोद सिया राम पद, बाढ़ै प्रीति न थोरि ॥ ५ ॥

चौपाई ।

भयो विदीर्ण अन्त ब्रह्माण्डा * ऐसे योग धीर वर बण्डा ॥

विद्यावारिधि श्रीस्वामी अवधशरणजी महाराज ने श्रीतुलसी कृत रामायण शोधकर टीका किया जो श्रीअयोध्याजी के श्रावण कुञ्ज में प्रसिद्ध है । मानस पीयूष आदि रामायण में उस टीका का प्रमाण लिया गया है । श्रीअवध शरणजी महाराज ने ही श्रीसख्य सिन्धु चन्द्रोदय ग्रन्थ निर्माण कर भक्ति-भाव को दरशाया । इन्हीं के शिष्य श्रीराम भुवन शरण जू थे । श्रीमधुर अलीजी महाराज श्रीराम सखेन्द्रजू के पत्नी शिष्य थे, उनको श्रृङ्गार भाव सिद्ध था । श्रीस्वामी रामबिहारी शरणजी महाराज योगिराज महात्मा थे । इनकी साकेत यात्रा ब्रह्माण्ड विदीर्ण होकर हुई थी । इन्हीं के छोटे गुरु भ्राता व्याकरण शास्त्री श्रीप्रमोदवन बिहारी शरणजी महाराज मैहर स्थान के महन्त हैं ।

चौपाई ।

शास्त्रीजू के चरण मनाऊँ * जासु कृपा रघुपति गुण गाऊँ ॥
बन्दौं दादा गुरु के चरणा * धनुष बाण दीन्ह्यों अघ हरणा ॥

रामलाल अस सुन्दर नामा * जिनकी कृपा पूर्ण सब कामा ।।
बन्दौं श्रीगुरु राम कुमारा * राम मन्त्र दे कीन्ह सुधारा ।।
सीताराम शरण युग चरणा * बन्दौं जासु नाम अघ हरणा ।।
बन्दौं सकल सन्त पद-कञ्जा * महामोह अघ दल मद गञ्जा ।।

दोहा—ऋषी मुनिन के पदकमल, पुनि-पुनि नावौं शीश ।
जिनके दर्शन मात्र से, पाप होइँ सब खीश ।। ६ ।।
श्रीजानकी धाम पद, बन्दौं वारंवार ।
जाकी कृपा प्रताप से, मिल्यो सन्त दर्बार ।। ७ ।।

चौपाई ।

विष्णु पुराण चरित सुख धामा * सुनत श्रवण मन लह विश्रामा ।।
जेहि दर्शन भव मिटै कलेशू * आन जन्म नहिं पावे देशू ।।
बन्दौं श्रीगङ्गा महरानी * सेवत होइ सकल अघ हानी ।।
बन्दौं श्रीमन्दाकिनि चरणा * परम पुनीत नाम अघ हरणा ।।
राम घाट को करौं प्रणामू * जहँ स्नान कीन्ह सियरामू ।।
बन्दौं कामद नाथ कृपाला * प्रेम भक्ति दे करहु निहाला ।।
बन्दौं श्रीवशिष्ठ मुनि नायक * रघुकुल गुरू परम सुख दायक ।।
भरत लखन रिपु सूदन केरे * चरण-कमल बन्दौं कर जोरे ।।

दोहा—श्रीमाण्डवी उर्मिला, श्रुतिकीरति सुख खानि ।
बन्दौं तिनके पद कमल, सदा जोरि युगपानि ।। ८ ।।

चौपाई ।

कौशल्या कैकई सुमित्रा * बन्दौं सुन्दर चरण पवित्रा ।।
बन्दौं चरण कमल सब माता * प्रेम भक्ति दीजै सुखदाता ।।
बन्दौं सरयूजी जग जाना * जिनहिं राम बहु बार बखाना ।।
बन्दौं अवधपुरी भूपाला * राम प्रकट भये जिनके लाला ।।
जनक राय बन्दौं कर जोरी * जाकी महिमा बहु मति थोरी ।।
बन्दौं अग्नि देव नल नीला * अङ्गद आदि भक्त शुभ शीला ।।

ध्रुव प्रह्लाद विभीषण जानो * जामवन्त सुग्रीव सुजानो ।।
औरहु भक्त भये कलि माहीं * जिनकी राम लीन्ह गहि बाहीं ।।
बन्दौं सबके चरण सुहाये * जिन्ह रघुनाथ चरण चितलाये ।।
सबसे विनय मोरि यह भाई * क्षमा करिअ सब मोरि ढिठाई ।।
बन्दौं हनूमान पद कञ्जा * जो अहिरावण दल-मद-गञ्जा ।।
कबित विचार दोष नहिं जानों * चित्रकूट गिरि सुयश बखानों ।।

दोहा—बन्दौं शालिग्राम हरि, तुलसी मात समेत ।
भक्ति हेत लीला करी, सेवत मुक्ती देत ।। ९ ।।

चौपाई ।

बन्दौं आदि शक्ति श्रीसीता * करहु हृदय परकाश पुनीता ।।
बन्दौं चरण कमल रघुनाथा * प्रेमभक्ति दे करहु सनाथा ।।
बन्दौं रामनाम जग जाना * राम नाम सम नाम न आना ।।
बन्दौं श्रीगुरु हरि भगवाना * पुष्य मास यह चरित बखाना ।।
दो हजार पन्द्रह के साला * बन प्रमोद बरणेउ यह हाला ।।
पाञ्चैं तिथि भे मरकर भानू * बुधवासर आनन्द निधानू ।।
श्रीरामायण वृहद् प्रधाना * सो चरित्र यह कीन्ह बखाना ।।
ऋषि शाण्डिल्य भुशुण्डि संवादा * रामचरित सुन्दर अति स्वादा ।।

दोहा—काग भुशुण्डी कहेउ तब, सुनु शाण्डिल मन लाइ ।
चित्रकूट महिमा कहौं, बुद्धि यथा मति गाइ ।। १० ।।

श्लोक—चित्रकूटो गिरिश्रेष्ठः श्रीरामपदभूषितः ।
यस्मिन् श्रीजानकीनाथो रमते सर्वदैव हि ।। १ ।।

चौपाई ।

रामचरित महिमा गिरिजाना * जहाँ बसत सिय राम सुजाना ।।
कपिल देव सनकादिक ज्ञानी * रामसिया चरणन रति मानी ।।
बासुदेव नारायण देवा * चाहत रामचरण रज सेवा ।।
ऐसे राम रमे गिरि माहीं * जिन्हहिं देखि बहु काम लजाहीं ।।

ब्रह्मा प्रथमहिं यह मति कीन्हीं * चित्रकूट वेदी रचि दीन्हीं ॥
तीस धनुष ताकर परमाना * जहाँ बसत तीरथ-ऋषि नाना ॥
जो नर इन्हकर दर्शन करई * होई सुखी निश्चय भव तरई ॥

दोहा—जो गङ्गा जल पान करि, रामचरण चित धारि ।
ताको सीतारामजू, निश्चय लेहिं उबारि ॥ ११ ॥

चौपाई ।

जो तीरथ परिकरमा देवे * सो निश्चय चारो फल लेवे ॥
साधु सन्त की पुरवत आसा * मिलत राम हिय होत हुलासा ॥
इनते सिद्ध होत सब काजा * कहैं भुशुण्डि सुनहु ऋषि राजा ॥

श्रीनारदजी की यात्रा वर्णन

दक्ष शाप पाई जब नारद * भये सोच वश हृदय विशारद ॥
नारद गये ब्रह्मा के लोका * दक्ष शाप कर बरणेउ शोका ॥
बोले ब्रह्मा प्रद विश्रामा * चित्रकूट जानहु सुख धामा ॥
मन्दाकिनि कीजै अस्नाना * कामद गिरि परिकर्मा जाना ॥

दोहा—कामद नाथ प्रताप से, मुक्त होइ तव शाप ।
रामचरणरज अङ्कित, हरत कोटि सन्ताप ॥ १२ ॥
कह ऋषि कागभुशुण्डि से, दक्ष शाप क्यों दीन्ह ।
श्रीनारद भगवान ने, कौन अवज्ञा कीन्ह ॥ १३ ॥

चौपाई ।

दक्ष सुतन निज आज्ञा दीन्हें * करहु जाइ तप मन थिर कीन्हें ॥
जासों बृद्धि शृष्टि की होई * स्वाभाविक सुखलह सब कोई ॥
नारद ज्ञान दीन्ह तब जाई * गृह मारग अतिशय दुखदाई ॥
सुनत वचन सो लक्ष्य विसारी * रामचरण सम्पति सब हारी ॥
सुना दक्ष तब बाढ़चो क्रोधा * काल बिवश उपजा नहिं बोधा ॥
दक्षशाप दीन्ह्यों ऋषि राई * सकल लोक महँ विचरहु जाई ॥

तब नारद ब्रह्मा ढिग जाई * दक्षशाप की कथा सुनाई ॥
कौन किये ब्रत तीरथ ताता * छूटे शाप हमारि बिधाता ॥

दोहा—कामदनाथ प्रदक्षिणा, मन्दाकिनि अस्नान ।
यहिते शाप छुड़ावहू, नारद सहज सुजान * ॥ १४ ॥

चौपाई ।

जेहि सेवत सब ऋषि मुनि देवा * जहाँ रमे रघुनन्दन देवा ॥
नारद मुनि सुनि कीन्ह पयाना * मन्दाकिनि कीन्हेउ अस्नाना ॥
कामद गिरि पुनि पहुँचेउ जाई * कीन्ह प्रदक्षिण दाहिन लाई ॥
छूटि शाप मुनि भये सुखारी * ऐसो कामद गिरि हितकारी ॥

श्रीभरत लाल जू की यात्रा वर्णन

चौपाई ।

पुनि श्रीभरत अत्रि संबादू * सुनहु चरित जो हरत विषादू ॥
बोले भरत सुनहु ऋषि बानी * चित्रकूट यश वरणहु ज्ञानी ॥
चित्रकूट कर वरणहु भेऊ * जो सुनि रामचरित रति होऊ ॥
पुनि बोले ऋषि से नृप वचना * कहौ नाथ तीरथ की रचना ॥

दोहा—भरत लाल बोले वचन, सुनहु अत्रि महराज ।
चित्रकूट गिरि सरित वन, वरणहु सुनहि समाज ॥ १५ ॥

चौपाई ।

अत्रि कहेउ सुनिये यश राजन * यह चरित्र अघ-ओघ नशावन ।
रामचरित महिमा गिरि जानू * जहाँ रमे श्रीराम सुजानू ॥

---

*श्लोकः—चित्रकूटो गिरिश्रेष्ठः श्रीरामपदभूषितः ।
मन्दाकिनी नदी यत्र सर्वपापप्रमोचिनी ॥ १ ॥
गिरिराजश्चित्रकूटो यत्र मन्दाकिनी नदी ।
स्नात्वा मन्दाकिनी नीरे गिरेः कृत्वा प्रदक्षिणम् ॥
मुक्तशापो हरिं गायन् विचरस्व यथा सुखम् ॥

मन्दाकिनि मज्जन करि नेरे * करहु प्रदक्षिण गिरि चहुँ फेरे ।।
जेहि सेवन करि के सब प्रानी * होहिं विमुक्त सकल अघ-खानी ।।
शिव विरञ्चि सेवें सब कोई * मणिन जड़ित जानहु गिरि सोई ।।
कह भुशुण्डि सुनि के ऋषि वानी * भरतलाल अतिशय सुख मानी ।।
गुरु बशिष्ठ सब मातु समेता * भरत चले गिरिराज निकेता ।।
गिरि प्रभाव देखेउ तहँ नयना * सकल सिद्धि-प्रद मानि सुबयना ।।
गङ्गा यमुना सरयू देखी * काशी गया कावेरी पेखी ।।
पुष्कर पयस्विनी हरि विरजा * गोदावरी गण्डकी गिरिजा ।।
औरहु तीरथ जो महि माँहीं * भरतलाल देखेउ महि पाहीं ।।
कामद गिरि देखेउ करि चारा * चौरासी योजन विस्तारा * ।।

दोहा—ऐसो कामदनाथ कर, देखेउ भरत प्रभाव ।
दीन्हेउ दान अनेक, विधि राम चरण मन भाव ।। १६ ।।

चौपाई ।

कीन्ह प्रदक्षिण दाहिन लाई * मन्दाकिनि तट पहुँचेउ जाई ।।
मन्दाकिनि करके अस्नाना * पञ्चतीर्थ को कीन्ह पयाना ।।
तीरथ कोटि चले हरषाई * निर्मल जल में आपु नहाई ।।
श्रीहनुमत का दर्शन कीन्हा * वन प्रमोद कहँ पुनि चलि दीन्हा ।
कीन्ह दरश पुनि पहुँचे आगे * कुण्ड जानकी चरणन लागे ।।

---

* श्लोकः—विरजां ताम्रपर्णीं च कावेरीं चैव नर्मदाम् ।
प्रयागं नैमिषं चैव धर्मारण्यं गयां तथा ।। २९ ।।
श्रीगिरि चतुरशीति योजनानां समुच्छितम् ।
सर्वदेवात्मकं दृष्ट्वा गिरेः कृत्वां प्रदक्षिणम् ।। २६ ।।
(वृहद्रामायण अ० २)

श्रीभरतलालजू ने श्रीकामद गिरि में श्रीविरजा जी आदि गङ्गा तथा हिमालय आदि पर्वत एवं चौरासी योजन ऊँचे श्रीकामद गिरिराज को देखा और उसकी परिक्रमा की ।

फटिक शिला पुनि कीन्ह पयाना * अत्रि सुआश्रम गयो विहाना ।।
करि मज्जन मन्दाकिनि माहीं * दीन्ह दान बहु विप्रन काहीं ।।
आशिष दीन्ह मुदित वश सेवा * सुमिरेहु राम सिया गुरु देवा ।।

दोहा—भरत लाल सब सैन्ययुत, मुनिन दण्डवत कीन्ह ।
राम राम सियाराम कहि, तुरत गवन बन कीन्ह ।। १७ ।।

चौपाई ।

गोदावरि पहुँचे जग पावन * महादेव पूजे मन भावन ।।
तुरत चले पहुँचे जहँ कूपा * तीर्थ प्रभाव देख सुखरूपा ।।
तीरथ सलिल राखि तेहि माँहीं * जाके दर्शन ते अघ जाहीं ।।
जो यहि जल करिहैं अस्नाना * ताको मुक्ति देहिं भगवाना ।।
व्यास कुण्ड उत्तर दिशि आगे * पावे दरश भाग्य बड़ जागे ।।
कामद गिरि ढिग पहुँचे आई * शय्या राम दरश सुखदाई ।।
यहि बिधि भरत प्रदक्षिण कीन्हा * सीताराम चरण रज लीन्हा ।।
पुनि माता गुरु मन्त्री रानी * पहुँचे जाइ अवध रजधानी ।।
गुरु विप्र पद बन्दन कीन्हा * सीता राम चरण चित दीन्हा ।।
भरत चरित गैइहैं नर-नारी * होइहैं राम भक्ति अधिकारी ।।

दोहा—ऋषि शाण्डिल्य बोले बचन, कहौ सत्य सब बात ।
काग भुशुण्डी मनहिं मन, हरि सुमिरत हरषात ।। १८ ।।
श्रीसुतीक्षण गुरुदेव सों, कीन्हेउ यह सन्देह ।
महाराज संशय हरण, राम चरण पद नेह ।। १९ ।।

श्रीयुधिष्ठिर जी की यात्रा वर्णन

चौपाई ।

पाण्डु पुत्र लै कुन्ती साथा * राज्य पाट जब छूटेउ हाथा ।।
चित्रकूट आये सब भाई * नारि सहित निज गुरहिं लेवाई ।।
मन्दाकिनि करि के अस्नाना * राम चरण कीन्हेउ पुनि ध्याना ।।

पहुँचे जाय कामदा पासा * कीन्ह प्रदक्षिण भयो हुलासा ।।
कछुक काल तहँ कीन्ह निवासा * कृष्ण चन्द्र तब कीन्ह सुपासा ।।
जाकी कृपा मिला सब राजू * गयो सोच भा सुखी समाजू ।।
ऐसे कामद नाथ कृपालू * प्रेम भक्ति प्रद हर भव जालू ।।
ऐसो एक और इतिहासा * जाके श्रवण होइ दुख नासा ।।

दोहा—राजा नल रानी सहित, पायो बहुत कलेश ।
मन्दाकिनि अस्नानते, भे पुनि सुखी नरेश ।। ३२ ।।

प्रेम प्राप्ति साधना वर्णन

चौपाई ।

जीव कृतारथ होन विचारी * कहौ नाथ ! भक्तन सुखकारी ।।
कामद गिरि सेवा सुख राशी * बरणहु राम भक्ति अविनाशी ।।
कौन धर्म तीरथ ब्रत नेमा * जाते होइ राम पद प्रेमा ।।
बोले ऋषि सुनि लीजै बाता * सेवा धर्म सहज सुखदाता ।।
जप, तप, अस्तुति, पाठ, पुराना * निशिदिन राम करै गुन गाना ।।
काहुक मत फल कन्द अहारा * रामरूप-चिन्तन श्रुति सारा ।।
पय अहार षट् मास बखानी * एक अहार सदा सुख जानी ।।
सत्य दया इन्द्रिय जित होवे * प्रेम मगन पुलकित तनु रोवे ।।
यहि प्रकार कीजै बहु योगा * क्रोध लोभ त्यागै सब भोगा ।।
तबहिं राम आवैं जन पासा * जब छूटै सब जग की आसा ।।

दोहा—यह संसार असार लखि, राम नाम लखि सार ।।
राम नाम दिन राति जपि, हो जावे भव पार ।। २० ।।
प्रेम भक्ति अनुराग बिनु, राम न आवैं पास ।
राम दरश बिनु आस बुझ, छूटै न भव कर फाँस ।। २१ ।।

चौपाई ।

बालखिल्य आदिक ऋषि नाना * कीन्ह तपस्या यहि अस्थाना ।।
परम रम्य गिरिवर यह धरणी * महिमा कहौं कौन बिधि बरणी ।।

जो यहि क्षेत्र करैं कछु दाना * ताकर सर्व काल कल्याना ।।
अन्न, बसन, भूषण दें जेई * राम चरण रति पावें तेई ।।
दाहिन दैव होई तब जानो * चित्रकूट गिरि दर्शन आनो ।।
चित्रकूट, तीरथ मँह तीरथ * चारों फल देने मँह समरथ ।।
चित्रकूट कर अचल प्रभावा * बड़े भाग्य नर दर्शन पावा ।।
सप्त पुरी चारो हरि धामा * चित्रकूट तिन्ह मँह अभिरामा ।।
चित्रकूट गिरि दर्शन लीन्हे * मानहुँ सकल तीर्थ हम कीन्हें ।।
चित्रकूट सब सोच-विमोचन * कामद गङ्ग दरश अघ-मोचन ।।

दोहा—चित्रकूट, मन्दाकिनी, मथुरा, अवध, प्रयाग ।
काशी, मिथिला, गण्डकी, देत भक्ति अनुराग ।। २२ ।।

चौपाई ।

और अनेक तीर्थ सुख कारी * जाको जौन जचै सो प्यारी ।।
मानस तीरथ बिनु अन्हवाये * होइ शुद्ध नहिं बेदन गाये ।।
सत्य दया इन्द्रियजित होई * कोमल हृदय तरै भव सोई ।।
ब्रह्मचर्यव्रत दृढ़ सन्तोषा * राम नाम मँह अचल भरोसा ।।
यहि प्रकार मुनि महिमा भाषा * सुनत सुतीक्षण बढ़्यो हुलासा ।।
श्रद्धा सहित तीर्थ कर जोई * ताकहँ सब साधन सिध होई ।।
तीरथ जाइ भद्र जो होवे * तेहि समूल सब पातक खोवे ।।
तीरथ-व्रत करिहैं जे प्रानी * रामभक्ति पावैं सुख खानी ।।
तीरथ दान करै जो प्रानी * दिन दूना बाढ़ै धन ज्ञानी ।।
यह चरित्र अतिशय सुख कारी * गावत सुख पावैं नर-नारी ।।

---

* श्लोक—चित्रकूटं महातीर्थं परं निर्वाणकारकम् ।।
तीर्थानां परमं तीर्थं मङ्गलानां च मङ्गलम् ।। १ ।।
सत्यं तीर्थं दयातीर्थं तीर्थमिन्द्रियनिग्रहः ।
सर्वभूत-दया-तीर्थं तीर्थमार्जव मेव च ।। २ ।।

दोहा—अष्ट सिद्धि नव निद्धि सब, चित्रकूट गिरिराज ।
सप्तावरण सुठाँउ महँ, श्रीरघुनाथ विराज ॥ २३ ॥

श्रीकामद गिरि सप्तावरण वर्णन

चौपाई ।

श्रीसुतीक्षण पुनि बोले वानी * महाराज तुम हो गुरु ज्ञानी ॥
जेहि प्रकार राजत अभिरामा * सीताराम लखन सुखधामा ॥
सो दयालु वरणहु वह भेऊ * जाते राम चरण रति होऊ ॥
सन्तन वन जानहु गिरि माहीं * मानसरोवर अद्भुत ताहीं ॥
तेहि के उत्तर मणि मय मन्दिर * चार द्वार सुनु अतिशय सुन्दर ॥
मूँगा रत्न जड़े जेहि माँही * सीताराम रमत तेहि माहीं ॥
हंसराज सोहत तेहि पासा * राम दरश कर रहत पियासा ॥
लगे हजारन मन्दिर खम्भा * निरखत नष्ट होइ मद-दम्भा ॥

दोहा—श्रीसीता रघुनाथ जू, बसत अनन्त समेत ।
तहँ वेदी मणि मय रचित, आहुति ऋषि मुनि देत ॥ २४ ॥

चौपाई ।

चारो घाट सरोवर सोहै * देखत ऋषियन कर मनमोहे ॥
कनकवर्ण सीढ़ी तहँ देखी * पारिजात मन हरत विशेखी ॥
पूरब दिशा वृक्ष मन्दारा * करै दरश पापन को छारा ॥
दक्षिण दिशि पाकर है भारो * पाय दरश सो होय सुखारी ॥
सन्त वृक्ष दिशि पश्चिम जानो * होय पुत्र दर्शन फल मानो ॥
उत्तर दिशि हरि चन्दन भारी * ताकर दर्श हवै सुखकारी ॥
वेदी मध्य कल्प की छाया * जाके दर्श दूरि दुख जाया ॥
सकल वृक्ष कर पुण्य विछाया * तेहि आसन राजत रघुराया ॥

दोहा—कुण्डल मुकुट तिलक युत, और सकल श्रृङ्गार ।
सिंहासन राजत सदा, सीतापति सरकार ॥ २५ ॥

चौपाई ।

गल सोहै पुष्पन की माला * पीताम्बर चित करत कमाला ॥
सोहत तहँ श्रीसीतानाथा * षोडश द्वार पाल लै साथा ॥
शिव-विरञ्चि इन्द्रादिक देवा * करहिं सकल रघुनन्दन सेवा ॥
तेहि के अन्दर औरहु भेवा * अग्नि चन्द्र सूर्यादिक देवा ॥
या बिधि देवन कीजै ध्याना * याते होइ तुरत कल्याना ॥
पर्वत भीतर मणि मय मन्दिर * राम-सिया राजत तहँ सुन्दर ॥
तिन्ह को ध्यान करहु चित लाई * जाते चित्त न और समाई ॥
सुनत सुतीक्षण बोलेउ बचना * आगिल कथा करहु अब रचना ॥
श्रीअगस्त्य बोले मुसुकाई * यह रहस्य अतिशय सुखदाई ॥
कमला आदि सखिन कर जोटा * राजत राम सङ्ग सब ढोटा ॥

दोहा—सुन्दर प्रथमावरण महँ, विमला-चन्द्रा लक्ष ॥
सीताराम चरण-रति, बसत निरन्तर स्वच्छ ॥ २६ ॥

चौपाई ।

कोइ सखि वीण बजावत ठाढ़ी * प्रेम मगन आनन्द जल बाढ़ी ॥
कोइ सखी मधुर मृदङ्ग बजावे * ताली दे रघुपति गुण गावें ॥
लागी करन नृत्य सखि कोई * राखि ध्यान रघुवर सुख होई ॥
द्वितीयावरण सिद्धि सब सोहें * निरखत मुनिन केर मन मोहें ॥
तृतीयावरण वेद की माता * ध्यानकरे रघुपति सुखदाता ॥
चौथावरण बसें त्रय देवा * विष्णु विरञ्चि आदि महादेवा ॥
पञ्चम माँहि मुनिन कर वासा * देखि राम-सिय बढ़त हुलासा ॥
सकल मुनिन जानहु ब्रह्मचारी * दिव्य सुगन्ध पिताम्बर धारी ॥

दोहा—श्रीबशिष्ठ भृगु अङ्गिरा, विश्वामित्र पुलस्त्य ।
बाल्मीकि गोतम कपिल, शाण्डिल अत्रि अगस्त्य ॥ २७ ॥

चौपाई ।

औरहु ऋषी बसैं तेहि माँही * रघुवर चरित सुनत पुलकाहीं ॥

षष्ठम माँहि तीर्थ सब सोहैं * पावत दर्श पाप रह कोहैं ॥
गंगा भागीरथी गोमती * सरयू विरजा आदि शोभती ॥
सप्तम माँहि सखा सब सोहैं * राम चरण चापत मुख जोहैं ॥
जामवन्त अंगद नल नीला * श्रीसुग्रीव विभीषण शीला ॥
श्रीहनुमन्त आदि कपि जेते * दिव्य रूप सोहैं सब तेते ॥
दिव्य वस्त्र धारण सब कीन्हें * राम नाम सुमिरैं चित दीन्हें ॥
दिव्य तिलक सोहै गल माला * इच्छा रूप धरैं तत्काला ॥
तिनके मध्य परम सुखदाई * सीता राम विहार सुहाई ॥
ऐसे कामद नाथ कृपाला * जाकर दर्श हरत जग जाला ॥

दोहा—कामद गिरि सम गिरि नहीं, अवध धाम सम धाम ।
वन प्रमोद सम वन नहीं, राम नाम सम नाम ॥ २८ ॥

चौपाई ।

ऋषि अगस्त्य बोले हर्षाई * सुनहु सुतीक्षण मन चितलाई ॥
पूरब द्वार कामदा नाथा * जानहु दिव्य मूर्ति रघुनाथा ॥
पूरब द्वार पुरन्दर वासा * नन्दन बन जानहु सुख रासा ॥
यहि अस्थल कर अमित प्रभावा * बड़े भाग नर सम्मुख आवा ॥
देवदारु हरिताल तमाला * सीसम शाखु कदम्ब रसाला ॥
श्रीसरस्वती बहैं जेहि पासा * चम्पा आम अशोक हुलासा ॥
तेहि वन में विहरत रघुवीरा * दीनबन्धु भञ्जन भव भीरा ॥
प्रात काल सखियन युत जाहीं * नन्दन बन विलोकि पुलकाहीं ॥

दोहा—भक्ति हेतु भगवान प्रभु करत अनेक चरित्र ।
सकल देव सेवत तिन्हहिं, यह इतिहास पवित्र ॥ २९ ॥

चौपाई ।

दक्षिण द्वार जान सुखधामा * धर्मराज तहँ करत मुकामा ॥
गंग पुनीत बहै तेहि ठामा * ताम्रपर्णि कृतमाला नामा ॥

वैश्रामिक वन सोहै पासा * वकुल कदम्ब अशोक पलासा ॥
मध्य दिवस रघुनन्दन जाहीं * मुनि मन ध्यान अगम जिन काहीं ॥
भरत मिलाप भेंट रघुराई * चरण चिह्न दर्शन सुखदाई ॥
दक्षिण दिशि है लषन पहाड़ी * सीढ़ी चढ़त पड़त अति आड़ी ॥
पश्चिम बरुण नित द्वार रहहीं * श्वेत छत्र तिन के सिर ढरहीं ॥
रघुनन्दन कर कीजे ध्याना * जिनके चरित अगम बिधि नाना ॥
पुष्प भद्र वन नाम सुहावे * सो रघुपति अतिशय मन भावे ॥
पीपल बेल आमली आमा * अँवरा वैर वरा सुख धामा ॥
जामुन जूही सोह सुपारी * कटहल केला तुलसी न्यारी ॥
चन्द्र भाग गंगा तहँ सोहैं * नदी कौशिकी आदिक जोहैं ॥
साँझ समय विहरैं रघुनाथा * धनुष वाण शोभित श्रीहाथा ॥
उत्तर द्वार केर सुनु भेऊ * धनपति द्वारपाल सुनि लेऊ ॥

दोहा—चैत्रक वन सुन्दर सुखद, भयो मन रघुलाल ।
श्रीसरयू यमुना बहत, हरत पाप तत्काल ॥ ३० ॥

चौपाई ।

भोज पत्र चम्पा अरु कुन्दा * वेल सुगन्ध लगावन फन्दा ॥
पारिजात हरि चन्दन सोहै * सदा वसन्ती मुनि मन मोहै ॥
वापी कूप तड़ाग अनेका * बसत अनेक जीव मत एका ॥
अर्ध रात्रि रघुनन्दन जाहीं * मुनि मन ध्यान धरत जिन काहीं ॥
ते तहँ नित्य सखन सँग डोलैं * प्रेम मगन सुन्दर मृदु बोलैं ॥
ऐसे कामद गिरि सुखकारी * रमे राम भक्तन हितकारी ॥
चार पदारथ पावत प्रानी * जो सेवत नित प्रति रति मानी ॥
काग भुशुण्डि कहेउ सुनि लीजे * जो सुनि सकल मोह भ्रम छीजै ॥

दोहा—कामद नाथ दरश करि, करत दण्डवत जोइ ।
रामचरण रति नित बढ़ै, पूर्ण मनोरथ होइ ॥ ३१ ॥

श्रीअनुसूयास्थल मन्दाकिन्युत्पत्तिवर्णन

चौपाई ।

मन्दाकिनि अस्नान प्रतापा * सात जन्म कर छीजै पापा ॥
सुनत सुतीक्षण नायो माथा * गंगा उत्पति बरणहु नाथा ॥
मन्दराचल पर्वत के पासा * मन्दाकिनि की उत्पति खासा ॥
अनुसूया आश्रम मन-भावन * अत्रि समेत कीन्ह तप पावन ॥
गंगा प्रकट भई बहु धारा * दर्शन ते अघ हरत अपारा ॥
अनुसूया यश कहिये स्वामी * जो सब पतिव्रता महँ नामी ॥
सुनि अगस्त्य बोले हरषाई * महासती महिमा सुधि आई ॥
सुनहु सुतीक्ष्ण सती इतिहासा * पुनि बरणौं जो पूछेहु खासा ॥
सती महामहिमा जलरासी * अकथनीय तिहुँ लोक प्रकासी ॥
परेउ अकाल वर्ष दस केरा * छायो हाहाकार घनेरा ॥
देखि सती उर करुणा आई * तप प्रभाव जग रक्षा ताँई ॥
कन्द मूल फल सिरजन कीन्हा * गङ्गा प्रकटि मुनिन्ह सुख दीन्हा ॥
अनुसूया महिमा मुनिराई * तीनों देविन्ह जाय सुनाई ॥
सुनि सतीत्व यश ईर्ष्या आई * लेन परीक्षा पतिन पठाई ॥

दोहा—ब्रह्मा विष्णु महेश तब, धारि यती कर वेश ।
अनुसूया के द्वार पर, कीन्हेउ जाय प्रवेश ॥ ३३ ॥
भवती भिक्षां देहि अस, भाषेउ तब त्रयदेव ।
सती रहीं अस्नान कर, वस्त्र विहीन यदेव ॥ ३४ ॥

चौपाई ।

अनुसूया पति का रुख पाई * भीतर उन्ह कहँ लीन्ह बुलाई ॥
प्रविशत ही तीन्हों शिशुरूपा * भये सतीत्व प्रभाव अनूपा ॥
महासती लखि सुन्दरताई * तीनहु देव जान हरषाई ॥
डारि पालने लगीं झुलाने * देवहु तेहि वात्सल्य भुलाने ॥
बहुत समय जब भयो व्यतीता * देविन मन तब भयो सभीता ॥

सुनि नारद सों सती प्रभावा * निज सतीत्व अभिमान दुरावा ॥
तुरतहि अनुसूया ढिग आई * दीजै मम पति विनय सुनाई ॥
बोलीं सती लेहु पहिचानी * शिशु तनु राजत निज-निज जानी ॥

दोहा—अन्य पतिन सन्देह वश, जब देविन्ह नहिं लीन्ह ।
सती छोड़ि जल तिहुन पर, सहज रूप करि दीन्ह ॥ ३५ ॥
चरण लागि निज पतिन सह, उमा रमा ब्रह्मानि ।
निज-निज लोकन कहँ गयीं, महिमा उर अति आनि ॥ ३६ ॥
सखी कथा सुनि रात्रि दस, दीन्हेउ उदय न होन ।
रक्षा हित वैधव्य रवि, महिमा कहि सक कौन ॥ ३७ ॥
नमस्कार के योग्य वे, सब चेतन के तात ।
पतिव्रता परमोत्तमा, अनुसूया तप ख्यात ॥ ३८ ॥

चौपाई ।

ऋषि पत्नी तप कीन्ह अपारा * लखि देवन मन कीन्ह विचारा ॥
आये देव मुनीश अगारा * बिधि हरि हर करि कृपा अपारा ॥
बोले महादेव मृदु बानी * लेहु माँगि वर जो मन मानी ॥
ऋषि सुपुत्र माँगेउ हरषाई * आपु समान देहु सुखदाई ॥

दोहा—ब्रह्मा विष्णु महेश तब, दीन्हें वचन उचार ।
तीन पुत्र होइहैं अतुल, तीनों तेज अपार ॥ ३९ ॥

चौपाई ।

विष्णु अंश के दत्त कहाये * ब्रह्म अंश के चन्द्र लखाये ॥
महादेव कर तेज अपारा * दुर्वासा शुभ नाम उचारा ॥
ऐसे पुत्र भये ऋषि केरे * तीन देव आनन्द घनेरे ॥
कीन्ह गान गन्धर्व सुहाई * ऋषि पत्नी अतिशय हरषाई ॥
दीन्ह दान बाजन बहु बाजे * मङ्गल ध्वनि जय जयति विराजे ॥
सिंहासन राजत श्रीदेवा * विष्णु विरञ्चि आदि महदेवा ॥
अनुसूया तब साज सजाई * पूजत हरिहिं अधिक हरषाई ॥

अनुसूया कर प्रेम अपारा * लखि देवन वर माँगु उचारा ।।

दोहा—अनुसूया बोलत भई, सुनो रमापति बैन ।
गङ्गा प्रकटें शैलसे, तबहिं होइ मन चैन ।। ४० ।।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश तब, कीन्हेउ वचन उचार ।
गङ्गा प्रकटीं शैल से, मेटन पाप पहार ।। ४१ ।।

चौपाई ।

अनुसूया तब अस्तुति कीन्हीं * बहु बिधि गुण-गण वरणै लीन्हीं ।।
जय अघहरणि सकल सुख देनी * मुक्ति हेतु साकेत निसेनी ।।
जय दुख हरणि सकल सुख खानी * श्रीमन्दाकिनि नाम बखानी ।।
श्रीमन्दाकिनि नाम कहावे * जो सेवे चारो फल पावे ।।
गिरि से प्रकट भई तब गङ्गा * भयो मुनिन आनन्द अभङ्गा ।।
मन्दाकिनि की महिमा भारी * बाल्मीकि बहु भाँति उचारी ।।

श्रीरामघाट यज्ञ वेदी तथा मत्तगेन्द्र महादेव का वर्णन

सतयुग माहिं ब्रह्म तप कीन्हा * यज्ञ करन कारण चित दीन्हा ।।
तब रघुनाथ प्रकट भये आई * देखि विरञ्चि चरण सिर नाई ।।
तुरत ब्रह्म बोले मृदु वचना * यज्ञ करन चाहौं प्रभु रचना ।।
क्षेत्र पवित्र बतावहु स्वामी * दीन बन्धु तुम अन्तर्यामी ।।

दोहा—यज्ञ करन के हेतु प्रभु, सुन्दर ठाँव बताय ।
सीता पति बोलत भये, मधुर वचन मुसुकाय ।। ४२ ।।

चौपाई ।

कामद गिरि मन्दाकिनि बीचा * तीस धनुष सुन्दर बिच बीचा ।।
अब तक कोउ नहिं जानत ताता * है हरि क्षेत्र पवित्र विधाता ।।
अन्तर्धान भये सुख रासी * चित्रकूट महिमा बहु भाषी ।।
कीन्ह्यों यज्ञ ब्रह्म भगवाना * तहाँ एक सब वेद विधाना ।।
ऋषि, मुनि-गण निवसैं बहु तहवाँ * सीताराम बसैं पुनि जहवाँ ।।
यह चरित्र सुनि जो हरषाहीं * तिन्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ।।

पुनः सुतीक्षण बोले वचना * औरहु चरित सुनावहु रचना ।।
प्रलय समय जब ब्रह्मा जाना * श्रीरघुनन्दन कीन्हेउ ध्याना ।।

दोहा—श्रीविरञ्चि सुमिरण कियो, पुनि पुनि सीताराम ।
रावण बध कीन्हेउ सुयश, देवन लहे विश्राम ।। ४३ ।।

चौपाई ।

जय श्रीराम कृष्ण अवतारा * जय वामन नरसिंह उदारा ।।
जब-जब नाथ दैत्य दुख दीन्हा * नाना तनु धरि रक्षा कीन्हा ।।
ऐसे दीन बन्धु रघुराई * दीन जनन पर होहु सहाई ।।
अस्तुति कीन्ह बिविध बिध नाना * तब बोले श्रीराम सुजाना ।।
यहि अस्तुति सम और न दूजा * कोटिन नेम, यज्ञ, ब्रत, पूजा ।।
ब्रह्मा कहेउ मूर्ति की पूजा * यह वर देउ और नहिं दूजा ।।
राम रूप सम और न दूजा * विष्णु महेश करैं जेहि पूजा ।।
बोले राम सुनहु यह बाता * वेदी से हम प्रकटब ताता ।।
त्रेता जब लैहौं अवतारा * पर्ण कुटी तहँ बसब दुबारा ।।
निशि दिन यहाँ करब हम वासा * पयस्विनी मानहु मम आसा ।।
जनक लली गायत्री रूपा * पयस्विनी रघुबीर स्वरूपा ।।
मन्दाकिनि सङ्गम जहँ तीनों * राघव सङ्गम है सुख भीनों ।।

दोहा—रामघाट अस्नान करि, भजहिं निरन्तर राम ।
चारो फल या में सुलभ, अन्त जाँई हरिधाम ।। ४४ ।।

चौपाई ।

मन्दाकिनी पयस्विनि गङ्गा * होइ देखि दारिद दुख भङ्गा ।।
रामघाट मन्दाकिनि माहीं * राम सिया मन मुदित नहाहीं ।।
शक्कर, मधू, दही, घृत कुल्या * मुक्ति हेतु यश राम अहिल्या ।।
चारो वेद भये नद रूपा * जो दरशन मिल सहज स्वरूपा ।।
परम पवित्र क्षेत्र यह जानो * दशासुमेरु सत्य यह मानो ।।
जेहि सेवत ब्रह्मा मुनि ज्ञानी * रामघाट जानहु सुख-दानी ।।

निर्मल जल मन्दाकिनि केरा * पान करत अघ हरत घनेरा ॥
जो नर धर्म करहिं यहि तीरा * ताको मुक्ति देहिं रघुबीरा ॥
वापी, कूप, तड़ाग खनावे * सुमन वाटिका बाग लगावे ॥
जो नर पुण्य करें तट पासा * ताकर पुण्य होइ नहिं नासा ॥

दोहा—चित्रकूट में रमि रहो, सुमिरो सीताराम।
पूरब पुण्य प्रताप से, मिलत यहाँ विश्रामा ॥ ४५ ॥

चौपाई।

यहि सम तीरथ और न भाई * सत्य कहौं दोउ भुजा उठाई ॥
श्री अगस्त्य अस कथा सुनाई * अन्तर्धान भये रघुराई ॥
तब ब्रह्मा शिव लिङ्ग पधारी * हाथ जोड़ि अस्तुति अनुसारी ॥
ब्रह्मपुरी तहँ है जग जाना * महादेव मतगेन्द्र प्रधाना ॥
जो नर शिव को शीश नवावें * सो यम त्राश भूलि नहिं पावें ॥
जो जल शिव को नित्य चढ़ावे * सीताराम भक्ति वर पावे ॥
जो प्रदक्षिणा नित प्रति करिहैं * चारो फल निश्चय सो पइहैं ॥
होइहै रामहि परम पियारा * ऐसे बिधि बहु वचन उचारा ॥

दोहा—प्रथमहि सतयुग माहिं जब, यज्ञ विधाता कीन्ह।
प्रकटे श्रीरघुनाथ तब, चरण धोई अज लीन्ह ॥ ४६ ॥

—: श्रीपयस्विनी गङ्गोत्पत्ति वर्णन :—

पयस्विनी तब प्रकटि दिखाई * दूध धार तहँ परी लखाई ॥
कामद गिरि से प्रकटी धारा * सब देवन सुख भयो अपारा ॥
जय जय शब्द कीन्ह सब देवा * सकल करत रघुनन्दन सेवा ॥
जो नर यहि कर दरशन पावैं * अन्त काल हरि लोक सिधावैं ॥
तीस धनुष सब तीरथ वासा * जा दर्शन छूटे भव-पासा ॥
पुनि ऋषि बोले सुन्दर बानी * औरहु कथा कहौ सुखदानी ॥
देवीदास विप्र कर बेटा * पाप निरत नित जात अखेटा ॥

पर्वत माहिं सर्प डसि लीन्हा * मृतक शरीर पयस्विनि दीन्हा ॥
तुरतइ बह्यो पयस्विनि आई * मुक्त भयो हरि लोक सिधाई ॥
चित्रकूट महँ तरिगा सोऊ * ऐसो तीरथ और न कोऊ ॥
कहहिं भुशुण्डि सुनहु ऋषिराजा * पार्वती बोलीं महराजा ॥
कीन्ह प्रश्न सब जीवन हेता * जग अवतार कहौ वृषकेता ॥
महादेव तब कहेउ बखानी * जेहि प्रकार सब भटकत प्रानी ॥
स्वेदज अण्डज पिण्डज जावे * तब पुनि मानुष का तनु पावे ॥
पूरब पुण्य उदय जब होई * सीताराम चरण रति होई ॥

दोहा—तब देवन धारत मनहिं, ब्रह्म, महेश, अनन्त।
सीताराम शरण होइ, पावत भव कर अन्त ॥ ४७ ॥

चौपाई।

तब साकेत राम ढिग जाई * होइ अचल रामहिं सङ्ग भाई ॥
पुनि बोले ऋषि गुरु से वचना * आगिल क्षेत्र सुनावहु रचना ॥

श्रीकोटि तीर्थ, हनुमानधारा आदि का वर्णनः—

करि अस्नान प्रदक्षिण कीजै * तीरथ कोटि दरश मन दीजै ॥

---

* श्लोक—अचले चित्रकूटे च मनोवाञ्छाफलं लभेत्।
अस्मिन् क्षेत्रे महापुण्ये धमकामार्थमोक्षदे ॥
पयस्विन्यः प्रभावाच्च देवीदासात्मजोऽञ्जसा।
अकालमृत्युमापन्नो महापापो दिवंययौ ॥

टिप्पणी—सतयुग में ब्रह्माजी की वेदी से जब श्रीरामजी प्रकट हुये तब ब्रह्मा जी ने चरण धोया। उस चरणोदक से श्रीपयस्विनी गङ्गा जी प्रकट हुईं जिनमें दूध की धार बहती हुई दिखाई देने लगी। श्रीपयस्विनी जू के प्रभाव से देवीदास ब्राह्मण का पुत्र पापों से मुक्त हो भगवान के धाम को गया।

कोटिन ऋषी करत तप भारी * सबहिं एक सँग मिले विहारी ।।
ताते तीरथ कोटि कहावे * बड़े भाग्य नर दरशन पावे ।।
अग्नि सूर्य सोमादिक तीरथ * दरश पाप मेटत सब समरथ ।।
देवाङ्गना कीन्ह तप जहवाँ * श्रीसरस्वती प्रकट भई तहवाँ ।।
पञ्च देव आदिक महदेवा * करहिं मुनीश्वर तिन्हकर सेवा ।।

दोहा—ब्रह्म सरोवर सुकपि सर, सङ्कर्षण अस नाम ।
जँह हनुमान विराजहीं, लङ्का दहन महान ।। ४८ ।।

चौपाई ।

तहँ पताल गङ्गाजू सोहैं * श्रीहनुमन्त समीपहिं जोहैं ।।
पुनि दर्शन श्री जानकी चरणा * चरणचिह्न दर्शन अघ-हरणा ।।

श्री प्रमोद वन माहात्म्य वर्णन

वन प्रमोद पुनि जावैं लोगू * तेहि दर्शन मेटत भव-रोगू ।।
चित्रकूट चित चौगुन चाऊ * वन प्रमोद दर्शन मन आऊ ।।
जहँ सियाराम नित्य प्रति आवैं * सुमन वाटिका लखि सुख पावैं ।।
वन प्रमोद विहरत रघुवीरा * सीता सहित लिये धनु तीरा ।।
वन प्रमोद त्रिभुवन मँह पूजित * शिव, विरञ्चि ऋषि-मुनि जन सेवित।।
नित प्रमोदवन रसिकन सङ्गा * खेलत राम उड़ावत रङ्गा ।।
जय प्रमोद वन अवध-विहारी * दीन बन्धु सन्तन हितकारी ।।
तीन रात्रि तहँ करे निवासा * जासु दरश मेटत भव पासा ।।

दोहा—वन प्रमोद सम वन नहीं, अवध धाम सम धाम ।
कामद गिरि सम गिरि नहीं, राम नाम सम नाम ।। ४९ ।।

श्लोक—ततः पारिप्लवं गच्छेत्तीर्थं त्रैलोक्यपूजितम् ।
आग्निष्टोमं त्रिरात्रिभ्यां फलं प्राप्नोति मानवः ।।१।। (अ० १३)
यत्र मन्दाकिनी रम्या स्रवति श्रीमती नदी ।
मणि निर्मित तोया च वज्रवैडूर्यबालुका ।। ९।। (अ० १३)

श्रीरामसखेन्द्रजी का जीवन चरित

दोहा—लखनलाल बनते रहे, रामसखे महाराज ।
पुनि आये श्रीअवध में, प्रकट प्रभाव समाज ।। ५० ।।
अवधपुरी से आय के, चित्रकूट की खोर ।
रामसखे मन हरि लियो, सुन्दर युगलकिशोर ।। ५१ ।।

टिप्पणी—श्रीरामसखेन्द्रजू का आविर्भाव जयपुर राज्य में सम्वत् १७५६ की श्रीरामनवमी के दिन कुलीन गौड़ ब्राह्मण के गृह में हुआ था । श्रीमहाराज जी का शील स्वभाव बाल्यावस्था से ही शुद्ध था । विद्याध्ययन करने के पश्चात् वे श्रीमाध्वसम्प्रदाय के अन्तर्गत दक्षिण उड़पी में श्रीवशिष्ठ मुनि से श्रीराम मन्त्र की दीक्षा ग्रहण करके घर से उदासीन हो श्रीराम लीला मण्डली में श्रीलखन लाल जू के स्वरूप बनते रहे । आप का सख्य भाव में दिनानुदिन प्रेम बढ़ने लगा ।

एक दिन श्रीरामजी श्रीलखनलालजी से कुछ कारण वश रूठ गये । उस दिन श्रीलखनलालजी ने भी भोजन नहीं किया । जब मण्डली वालों ने भोजन करने के लिये आग्रह किया तब श्रीलखनलाल जी ने कहा—जब श्रीरामजी आदेश देंगे तब भोजन करेंगे । ऐसा सुनकर मण्डली वालों ने श्रीरामजी से श्रीलखनलालजी को भोजन करने के लिये आज्ञा देने की प्रार्थना की । श्रीरामजी बोले—जब क्षुधा लगेगी स्वतः भोजन करेंगे ।

श्रीरामजी की स्नेह रहित इस वाणी को श्रवण करके श्रीलखनलाल जी को बड़ी ग्लानि हुई अतः वे रात्रि में ही जङ्गल चले गये और श्रीराम विरह में रोने लगे, तब श्रीरामजू प्रेम वश प्रकट होकर बोले—हे प्रिय ! भोजन कीजिये ।

सरकार की इस अमृतमयी वाणी को सुनकर वे निहाल हो गये और अभ्यान्तरिक परिताप को त्याग कर भोजन किये । श्रीलखनलाल जी को भोजन कराकर श्रीरामजी अन्तर्धान हो गये । किन्तु मन्दिर का थाली, गिलास, कटोरा आदि वहीं छोड़ गये । यहाँ प्रातः काल

दोहा—वन प्रमोद के कूप ढिग, रामसखे तप कीन्हँ।
सीतारामजू प्रेम वश, आय दर्श तब दीन्ह ॥ ५२॥

पुजारीजी मन्दिर का ताला खुला देखकर घवड़ा गये पुनः जब भीतर गये तो श्रीभगवान के कतिपय पार्षद भी नहीं दिखाई पड़े। यह बात शनैः शनैः राजदरबार तक पहुँच गयी।

इधर लीला मण्डली वाले भी श्रीलखनलालजी को खोजने लगे। जङ्गल में पहुँचने पर उन्हें थाली कटोरा आदि पार्षद व श्रीलखनलालजी मिले। उन्होंने पूछा—इन पार्षदों को यहाँ कौन लाया है ? श्रीलखनलालजी ने कहा—श्रीरामजी हमारे लिये इन पात्रों में भोजन लाये थे। यह सुनकर मण्डली वालों ने श्रीरामजी से पूछा तब उन्होंने कहा—हमें फँसाने के लिये अच्छी युक्ति सोची है। हमारा क्या मतलब कि रात्रि में मन्दिर का ताला खोलें ? भोजन खिलाना ही होता तो दिन में ही पवा देते।

श्रीरामजी की बात सुनकर विद्वान लोग सोचने लगे कि यह कोई श्रीराघवेन्द्रसरकारजू की ही अद्भुत लीला है क्योंकि राजमन्दिर में हमेशा पहरा रहता है।

श्रीलखनलालजी वहाँ से चलकर श्रीगुरुजी महाराज के पास आकर श्रीवैष्णवधर्म-भावादि को अध्ययन करके श्रीअवध जी आये। और श्रीसरयू जी के किनारे श्रीवासुदेव घाट के श्रीमन्नृत्यराघव कुञ्ज में पर्णकुटी बनाकर रहने लगे। एक समय बड़ी जगह में महात्माओं ने सख्योपासना की परीक्षा लेनी चाही। सन्तों ने कहा—यदि आप के सामने श्रीरामजी प्रत्यक्ष क्रीड़ा करें, तो आपको सच्चा सखा मानें। इस बात को सुनकर आप चुप रहे। थोड़े ही विलम्ब में श्रीराघवेन्द्र सरकारजू धनुष बाण धारण कर क्रीड़ा करने लगे। आज तक श्रीअयोध्याजी के बड़ी जगह स्थान में वे श्रीधनुषधारी भगवान विद्यमान हैं। कुछ दिनों तक श्रीरामसखेन्द्रजी महाराज यहीं भजन करते रहे—

पुनः सम्वत् १८२४ में श्रीचित्रकूट प्रमोद-वन आकर भजन करने लगे।

दोहा—शालिग्राम सुकूप यह, भरत कूप सम जान।
रामसखे के रामजू, कीन्ह कूप अस्नान ॥ ५३ ॥

एक समय वे श्रीमन्दाकिनी गङ्गा में स्नान करके श्रीशालिग्राम भगवान की पूजा कर रहे थे, अकस्मात् श्रीशालिग्राम भगवान की मूर्ति सिंहासन से लुढ़क कर कूप में चली गयी। यह देखकर श्रीरामसखेन्द्रजू महाराज व्याकुल होकर इस पद को गाने लगे :—

मिल जाना श्रीराम पियारे।
वन प्रमोद में खड़े पुकारूँ, सुन्दर रूप उजियारे।
सुन्दर वदन कमल दल लोचन मों अँखियन के तारे।
रामसखे जल विनु ज्यों मछली, तलफत प्राण हमारे ॥

तीन दिन व्यतीत हो गये तब उन्होंने यह दोहा पढ़ा—

अरे शिकारी निर्दयी, करिया नृपतिकिशोर।
क्यों तरसावत दर्श विनु, रामसखे चित-चोर ॥

इस दोहे को पढ़ते ही कूप का जल बढ़ आया और श्रीशालिग्रामजी स्वयं जल में कीड़ा करते हुये दिखाई पड़े, तब श्रीरामसखेन्द्रजू ने उठा कर उन्हें हृदय से लगा लिया। पुनः कुछ ही दिनों के पश्चात् भक्तवत्सल प्रभु श्रीसीतारामजू ने प्रकट होकर दर्शन देने की कृपा की।

श्रीसीताराम जी युगल सरकार का दर्शन करके उन्होंने साष्टाङ्ग दण्डवत् की, तब श्रीसीतारामजू महाराज उन्हें अभीष्ट सुखप्रदान करके अन्तर्धान हो गये।

कुछ समय बीतने पर पन्नानरेशजी ने श्रीमहाराजजू का दर्शन करके उन्हें सन्तभगवान की सेवा के लिये ५ ग्राम अर्पण करने की इच्छा निवेदन की किन्तु श्रीमहाराजजू ने उसे अस्वीकार कर दिया। इस प्रकार श्रीमहाराजजू के अनेक लोकोत्तर चरित्र हैं और अनेक ग्रन्थ भी, जिन्हें इस तुच्छ लेखनी में लिखने की शक्ति ही नहीं हैं। श्रीमहाराजजू सभी विद्याओं में कुशल थे। उनकी श्रीसाकेत यात्रा आश्विनी शुक्ला सप्तमी सम्वत् १८४२ में हुई थी।

दोहा—रामउपासक रसिक जग, तीन कालहू माहिं ।
वर विराग धारण करन, रामसखे सम नाहिं ॥ ५४ ॥

चौपाई ।

सखाभाव रघुपति से लीन्हें * वनप्रमोद अतिशय तप कीन्हें ॥
सुनि आये पन्ना अवनीशा * पाँचग्राम कह लेहु मुनीशा ॥
बोले हमैं एक नहिं चाही * है बहु दोष ग्रामधन माहीं ॥
पुनि शिष्यन मन्दिर बनवावा * सीताराम मूर्ति पधरावा ॥
सन्तशरण हैं कुशल पुजारी * जिनपर कृपा राम की भारी ॥
आये पुनि रीवाँ महिपाला * यज्ञहेतु बनवायो शाला ॥
एक साल भर नेम करावा * श्रीरघुराज जन्म तब पावा ॥
पुनि मन्दिर राजा बनवायो * लक्ष्मीनाथ मूर्ति पधरायो ॥
पुष्प वृक्ष लगायो तहवाँ * श्रीरघुराज अचल यश लहवाँ ॥
रामलखण सीता कर मन्दिर * जाके दरश होइ चित सुन्दर ॥
गऊघाट मन्दाकिनि मज्जन * बड़े भाग्य नर पावें सज्जन ॥
निर्मल जल सन्तन मन भावे * कुण्ड जानकी ह्रद कहावे ॥

दोहा—जहाँ सन्त बहु बसत हैं, धरत राम कर ध्यान ।
सुन्दर घाट सुहावनो, करत सन्त अस्नान ॥ ५५ ॥

श्रीजानकीकुण्ड स्फटिकशिला—आदि का वर्णन

तेहि के लगभग दक्षिण आशा * कुण्ड जानकी वेद प्रकाशा ॥
परम रम्य सुन्दर तट तहवाँ * सीताराम विहार सुजहवाँ ॥
चरण-चिह्न सोहत तहँ तीरा * जाके दर्श मिटे भव-पीरा ॥
जाके पूजन ते रघुनाथा * होइँ प्रसन्न सत्य यह गाथा ॥

श्लोक—सीता कुण्डे नरः स्नात्वा चरणौ पूज्य भक्तितः ।
भक्तियोगमवाप्नोति महापातकनाशनम् ॥

चौपाई ।

कुण्ड जानकी घाट कहावे * चरण चिह्न सब शीश नवावे ॥
पश्चिमदिशि सोहैं तहँ मन्दिर * राम लखन सीता युत सुन्दर ॥
अवध विहारी शरण पुजारी * शास्त्री जी के आज्ञाकारी ॥
और अनेक दिव्य अस्थाना * सीतारामदरश जहँ जाना ॥
सोइ सुन्दर शुभ लक्षण जाके * श्रीरघुवीरशरण जिन ताके ॥

दोहा—चरण चिह्न से दक्षिण, लक्ष्मण घाट उदार* ।
पुनि आगे शृङ्गार वन, फटिक शिला सुखसार ॥ ५६ ॥

चौपाई ।

तहँ शृङ्गार कीन्ह रघुनाथा * रामचरित मानस सो गाथा ॥
जहाँ परीक्षा लीन्ह जयन्ता * राम विमुख फल लहेउ तुरन्ता ॥
पुनि अनुसूया आश्रम जावे * श्रीहनुमन्तहिं शीश नवावै ॥
पाप दरिद्र छुड़ावन हारी * ऋण को भार उतारन वारी ॥
ये सब शिला हवैं जल माँहीं * अनुसूया-आश्रम ढिग पाहीं ॥
तेहि के दर्श करै हरषाई * अमरावती दरश सुखदाई ॥

श्रीअनुसूया जी से श्रीशरभंग आदि मुनि आश्रमों का वर्णन

चौपाई ।

जाके दरश होइ सब काजा * सुन्दर वन जानहु महराजा ॥
पुनि वैतरणी नदी सुहावन * ऋषभदेव कर आश्रम पावन ॥
पुनि पुष्करणी दरश तलाई * इन्द्रयज्ञ कीन्हेउ जेहि ठाईं ॥
वृत्रासुर कर शाप अपारा * जाके दरश भयो सब छारा ॥
पुनि आगे जहँ ऋषि शरभङ्गा * सुन्दर कुण्ड प्रकट जहँ गङ्गा ॥

---

* श्लोक—तस्य दक्षिणदिग्देशे तीर्थं रामानुजं स्मृतम् ।
तत्र स्नात्वा नरो धीमान् रूपवानभिजायते ॥

दण्डक वन पश्चिम दिशि जावे * सूर्यकुण्ड मोरध्वज पावे ॥

दोहा—तहाँ सुतीक्ष्ण अगस्त्य कर, आश्रम परम पुनीत ।
जाके दरशन परम सुख, होइ राम पद प्रीति ॥ ५७ ॥
पुनि गोदावरि आइ के, पूजै शिव सुखधाम ।
जिनके कृपा प्रताप से, पूरहिं सब मन काम ॥ ५८ ॥

श्रीगुप्तगोदावरी से कालिञ्जर अंगिरा कुण्ड—आदि का वर्णन

चौपाई ।

पुनि सब देवन के गुरुदेवा * कीन्ह तपस्या जहँ ऋषि देवा ॥
नाम वृहस्पति है तपधारी * विष्णु निरञ्चि दर्श सुखकारी ॥
राम सरोवर दर्शन जावे * सो यम त्रास भूलि नहिं पावे ॥
मारे राम शरासन तीरा * तुरतै प्रकट भयो तहँ नीरा ॥
रामगङ्ग तेहि नाम उचारे * तेहि मज्जन हरि धाम सिधारे ॥
श्यामसूत्र कर दर्शन पाई * कीन्ह यज्ञ अज जहँ हरषाई ॥
पाये यज्ञभाग सब देवा * जय जय शब्द कीन्ह मुनिदेवा ॥
पुनि पूजै गौरी महदेवा * जाते पुनर्जन्म नहि लेवा ॥
कपिल देव कर दर्शन कीजै * धेनु सहस्र दान फल लीजै ॥
कालिञ्जर दर्शन पुनि जाना * मन्दाकिनि कीजै अस्नाना ॥

दोहा—कोटिन तीरथ हैं तहाँ, निश्चय लीजै जान ।
प्रेम सहित पूजै तहाँ, नीलकण्ठ भगवान ॥ ५९ ॥

चौपाई ।

सरस्वती गङ्गा तहँ सोहैं * परम पवित्र देखि मन मोहैं ॥
पुनि अङ्गिरा कुण्ड कहँ जावे * आगे सुरगुरु कुण्ड कहावे ॥
सूर्य कुण्ड कर दर्शन कीजै * ब्रह्म सरोवर पुनि लखि लीजै ॥
पुनि माण्डव ऋषि आश्रम आई * पाप विमोचन कुण्ड लखाई ॥

श्रीमाण्डव आश्रम, भरतकूप, सूर्यकुण्ड आदि का वर्णन

चौपाई ।

पुनि उत्तर दिशि जावै प्रानी * पञ्चमुखी महदेव भवानी ॥
जाके दरश पाप सब मेटै * पुनि मणिकूट शैल कहँ भेण्टै ॥
सीताशय्या दर्शन कीजै * पुनि श्रीभरत कूप मन दीजै ॥
जहाँ सलिल सब तीरथ केरा * दर्शन से अघ हरत घनेरा ॥
कामद गिरि तें पश्चिम आसा * रुचिर रामशय्या अति पासा ॥
तासु सुपावन दर्शन कीजै * पश्चिम बज्रशैल चल दीजै ॥
द्रोण आदि पर्वत तहँ सोहैं * रबि दिन ताकी यात्रा जोहैं ॥
ब्यास कुण्ड पुनि दर्शन कीजै * सूर्यकुण्ड यात्रा मन दीजै ॥

दोहा—सूर्यकुण्ड में आइके, कीजै पुनि अस्नान ।
मानस तीरथ दरश करि, मेटत पाप महान ॥ ६० ॥
पूरब दिशि ब्रह्माण्ड सर, महादेव जग जान ।
संहारत सब प्रलय महँ, जानहु शक्ति महान ॥ ६१ ॥

चौपाई ।

चित्रकूट से पूरब दूरी * बालमीकि आश्रम सुखभूरी ॥
षोडश मील जान परमाना * दर्शन योग्य दिव्य अस्थाना ॥
कह भुशुण्डि औरहु सुनु बाता * तीरथ नाम ह्वै विख्याता ॥
महाभवानी आश्रम एका * उत्तर दिशि लह दर्श बिवेका ॥
गृद्धकूट कर दर्शन पाई * गङ्गा दर्श परम सुखदाई ॥
एक सौ धार भई हैं जहवाँ * करैं ऋषीश्वर तप बहु तहवाँ ॥

श्रीचित्रकूट से पूर्व बाङ्केसिद्ध चक्रतीर्थ आदि का वर्णन

चौपाई ।

चक्रतीर्थ पुनि दर्शन कीजै * सुभग कुण्ड दक्षिण चलि दीजै ॥
वहाँ अनेक तीर्थ जल माहीं * श्री लक्ष्मीनिधि हैं तेहि पाहीं ॥

पुनि वशिष्ठ आश्रम सुखदाई * वामदेव दर्शन पुनि पाई ॥
पुनि लोमश ऋषि आश्रम देखी * गौतम परम तपस्वी पेखी ॥
पूरब गणपति कुण्ड सुहावन * ताकर दर्श सिद्धप्रद पावन ॥
औरौ ऋषिन पूर्व अस्थाना * दक्षिण कामधेनु जगजाना ॥
कामदेव कर आश्रम दक्षिण * पुनि देवी आश्रम दुख भक्षण ॥
और अनेक देवि अस्थाना * दर्शन फल पावै मन माना ॥

दोहा—परशु राम अस्थान पुनि, दालभ ऋषि जगजान ।
सावित्री अरु सरस्वती, आश्रम है सुखदानि ॥ ६२ ॥
लषण लाल सीता सहित, राम चन्द्र भगवान ।
श्रीगणपति महदेव को, पूजत सकल जहान ॥ ६३ ॥

चौपाई ।

नैर्ऋत दिशि से उत्तर आवे * श्री अगस्त्य कर दर्शन पावे ॥
श्री अगस्त्य कर आश्रम पावन * ऋषि सुतीक्ष्ण कर पुनि मन भावन ॥
कामद गिरि मन्दाकिनि पारा * योजन एक माँहि विस्तारा ॥
तेहि के मध्य मुनिन अस्थाना * श्रीसाकेत नगर जग जाना ॥

साष्टाङ्ग दण्डवतप्रदक्षिणा-माहात्म्यवर्णन

चौपाई ।

अस गिरिवर कर महिमा मानो * दण्ड प्रदक्षिण कर फल जानो ॥
पुत्र सुकण्ठ केर गन्धर्वा * नाच गान में जानों सर्वा ॥
ऋषि ऋचीक के सम्मुख जाई * नाच कूदि मनि ध्यान डिगाई ॥
बोले मुनि अब अन्तै जाहू * राम विमुख सुख है नहिं काहू ॥
तब गन्धर्व कहा खिसियाई * आपहिं चले जाहु ऋषिराई ॥
तब ऋषि बोले क्रोधित बाता * राक्षस होहु दुष्ट तुम ताता ।

दोहा—तब ऋषि के चरणन गिरेउ, तुरतहि कीन्ह पुकार ।
क्षमहु मोर अपराध प्रभु, करहु शीघ्र उद्धार ॥ ६४ ॥
पाञ्च वरष के बाद में, मिटिहै शाप तुम्हार ।
भरद्वाज मुनि की शरण, जाहु करहिं निस्तार ॥ ६५ ॥

तुरतहि राक्षस का तनु लीन्हा * भरद्वाज आश्रम चल दीन्हा ॥
मुनि से चरित कहा सब गाई * मोपर कृपा करहु ऋषि राई ॥
ऋषि बोले सुन लीजै वाणी * चित्रकूट गिरि याचत प्राणी ॥
मन्दाकिनि मँह मज्जन कीजै * कामद गिरि लोटत चलि दीजै ॥
चार प्रदक्षिण कीजै जाई * याते पाप नष्ट होइ जाई ॥
करत दण्डवत् रज कण लागै * अघ दरिद्र दुख देखत भागै ॥
छूटेउ पाप गयो हरि लोका * मृत्यु काल नहिं पायो शोका ॥
राम चरण रज अङ्कित गिरिवर * दरशन पाइ भाव जस रघुवर ॥
ब्रह्मवेदि कर दर्शन कीजै * एक मास लों दीपक दीजै ॥

दोहा—विजया दशमी से करै, कार्तिक मँह भरपूर ॥
इस प्रकार जो नेम कर, शोक होइ सब दूर ॥ ६६ ॥

श्रीकामदगिरिमन्दाकिनी के मध्यतीर्थों का वर्णन

चौपाई ।

कामद गिरि से पूरब आसा * वाल्मीकि आश्रम सुखरासा ॥
पुनि चैमन शाण्डिल अस्थाना * थोड़े भजन मिलैं भगवाना ॥
तेहि के अग्नि दिशा गोमाना * पर्वत नाम सकल जग जाना ॥
श्रीअगस्त्य कर आश्रम सोहै * दक्षिण दिशि माणिक गिरि जोहै ॥
गर्गाचार्य केर अस्थाना * पुनि नैर्ऋत दिशि करै पयाना ॥
सुराचार्य मुनि आश्रम भारी * पश्चिम दिशि गोवर्धन धारी ॥
मुनि बशिष्ठ कर आश्रम पावन * पुनि भृगु आश्रम है मन भावन ॥
तेहिके उत्तर है गिरि जानो * मुनि पुलस्त्य कर आश्रम भानो ॥
कामदगिरि मन्दाकिनि मध्या * आश्रम हवैं अनेक प्रसिद्धा ॥
वालखिल्य आदिक मुनि नाना * करैं तपस्या सब जग जाना ॥
नाम रूप लीला हरि धामा * इन्हते नर पावहिं विश्रामा ॥
राम लषण अब शरण विहारी * देहु भक्ति सन्तन हितकारी ॥

दोहा—रामघाट सम घाट नहिं, कीन्ह राम अस्नान।
तेहि को सङ्गम* कहत हैं, मेटत पाप महान ॥ ६७ ॥
चित्रकूट सब दिन सुलभ, दर्शन ते अघ जाय।
जो रमिहै नित नियम करि, राम चरण चित लाय ॥ ६८ ॥
सो साकेत सिधारिहैं, या में नहिं सन्देह।
जो नर या को गाइहैं, होय राम पद नेह ॥ ६९ ॥
ज्येष्ठ शुक्ल पुरुषोत्तमी, द्वितिया दिन कुजवार।
वन प्रमोद सियारामयश, पूरण भा श्रुतिसार ॥ ७० ॥
श्रीगुरु चरण प्रताप से, वरणेउँ यह इतिहास।
श्रीरघुनन्दन लीजिये, राखहु अपने पास ॥ ७१ ॥
राम लखन अब शरण प्रभु, सीता पति रघुनाथ।
प्रेम भक्ति दीजै अचल, जाते होहुँ सनाथ ॥ ७२ ॥

इति श्रीवृहद्रामायणीय श्रीचित्रकूट माहात्म्यं
श्रीमद्रामसखेन्द्रनिध्याचार्यवंशोद्भव-
स्वामि श्रीरामकुमारशरणकृपापात्रेण
श्रीरामलषणशरणमहात्मना भाषाकृतं
समाप्तम्।

ज्यैष्ठी पुरुषोत्तमी शुक्ला द्वितीया भौमवार
विक्रम सम्वत् २०१८, गतकलिः सम्वत् ५०३२।

——:०:——

* श्लोक—वालखिल्यैर्मुनिगणैर्यत्र तप्तं महत्तपः।
पयस्विनी च सावित्री गङ्गा मन्दाकिनी तथा ॥ १ ॥
एतासां सङ्गमो यत्र प्रयागं राघवं विदुः।
सनकाद्यैर्मुनिगणैर्यत्र तप्तं महत्तपः ॥ २ ॥

परिशिष्ठ भाग

श्री गीतावली (श्रीअयोध्या काण्ड)

राग गौरी

देखत चित्रकूट वन मन अति होत हुलास।
सीता-राम-लषण-प्रिय, तापस-वृन्द-निवास ॥ १ ॥

सरित सोहावनि पावनि, पाप हरनि पय नाम।
सिद्ध-साधु-सुर-सेवित देति सकल मन-काम ॥ २ ॥

विटप-वेलि नव किसलय, कुसुमित सघन सुजाति।
कंदमूल थल-जलरुह अगनित अनबन भाँति ॥ ३ ॥

बञ्जुल मंजु बकुल कुल, सुरतरु, ताल, तमाल।
कदलि, कदंब, सुचम्पक, पाटल, पनस, रसाल ॥ ४ ॥

भूरुह भूरि भरे जनु छवि-अनुराग-सभाग।
बन बिलोकि लघु लागहि विपुल विबुध-वन-बाग ॥ ५ ॥

जाइ न बरनि राम-बन, चितवत चित हरि लेत।
ललित-लता-द्रुम-संकुल मनहु मनोज निकेत ॥ ६ ॥

सरित-सरनि सरसीरुह फूले नाना रंग।
गुंजत मंजु मधुपगन, कूजत विविध बिहंग ॥ ७ ॥

लषन कहेउ, रघुनन्दन, देखिय विपिन-समाज।
मानहु चयन मयन-पुर आयउ प्रिय ऋतुराज ॥ ८ ॥

चित्रकूट पर राउर जानि अधिक अनुरागु।
सखा सहित जनु रतिपति आयउ खेलन फागु ॥ ९ ॥

झिलिं झाँझ, झरना डफ नव मृदंग निसान ।
भेरि उपंग भृंग रव, ताल कीर-कल गान ॥ १० ॥
हंस कपोत कबूतर बोलत चक्क चकोर ।
गावत मनहु नारि-नर मुदित नगर चहुँ ओर ॥ ११ ॥
चित्र-विचित्र विविध मृग डोलत डोंगर डाँग ।
जनु पुरवीथिन विहरत छैल सँवारे स्वाँग ॥ १२ ॥
नचहिं मोर, पिक गावहिं, सुर वर राग बँधान ।
निलज तरुन-तरुनी जनु खेलहि समय समान ॥ १३ ॥
भरि भरि सुंड करिनि-करि जहँ तहँ डारहिं वारि ।
भरत परसपर पिचकनि मनहु मुदित नर-नारि ॥ १४ ॥
पीठि चढ़ाइ सिसुन्ह कपि कूदत डारहि डारि ।
जनु मुँह लाइ गेरु-मसि भए खरनि असवार ॥ १५ ॥
लिये पराग सुमन रस डोलत मलय-अमीर ।
मनहु अरगजा छिरकत, भरत गुलाल-अबीर ॥ १६ ॥
काम कौतुकी यहि विधि प्रभु हित कौतुक कीन्ह ।
रीझि राम रतिनाथहि जग-विजयी वर दीन्ह ॥ १७ ॥
दुखवहु मोरे दास जनि, मानेहु मोरि रजाइ ।
भलेहि नाथ माथे धरि आयसु चलेउ बजाइ ॥ १८ ॥
मुदित किरात-किराततिनि रघुवर-रूप निहारि ।
प्रभुगुन गावत नाचत चले जोहारि जोहारि ॥ १९ ॥
देहि असीस, प्रसंसहिं मुनि सुर बरषहिं फूल ।
गवने भवन राखि उर मूरति मंगल मूल ॥ २० ॥
चित्रकूट-कानन-छबि को कवि बरनै पार ।
जहँ सिय-लषन सहित नित रघुवर करहिं विहार ॥ २१ ॥
तुलसिदास चाँचरि मिस कहे राम-गुनग्राम ।
गावहिं, सुनहिं नारि नर, पावहिं सब अभिराम ॥ २२ ॥

पद

अब मन चित्रकूट कहँ चेत ।
सीता लखन सहित रघुनन्दन राजत परन निकेत ।
कामद गिरि मन्दाकिनि गङ्गा, चार पदारथ देत ॥
रामलखन अब शरण रामजू- चाहत चरणन रेत ॥

(१)

भजु मन दीनबन्धु रघुराया ।
बने बने का सब कोइ साथी, बिगरे काम न आया ।
बिनु हरि कृपा मोह नहिं छूटै क्रोध न छूटै माया ॥
सुत वनिता सम्पति तन माहीं वृथा मोह मन जाया ।
या ते मन तू निश्चय कर ले रामहि एक सहाया ॥
रामलखन अब शरण रामजू, करहु बाँह की छाया ।

(२)

श्रीप्रमोद बव विहारी । अब लेना खबर हमारी ।
क्रोध मोह अति मोहिं सतावत, इन्ह ते लेहु उबारी ॥
वेद पुराण ऋषी मुनि गावत, महिमा तुम्हरी भारी ।
बालक अबुध ज्ञान कछु नाहीं अब प्रभु लेहु सुधारी ॥
राम लखन अब शरण रामजी देहु भक्ति हितकारी ।

(३)

रम मन चित्रकूट चितलाई ।
कामदगिरि को दर्शन पैहहैं, नित उठि गङ्ग नहाई ॥
काम क्रोध नहिं मोह सतैहहैं, भजहु सिया रघुराई ।
साधु सन्त के दर्शन कीजै, रघुपति यश सुखदाई ॥
चित्रकूट की महिमा भारी . बालमीकि मुनि गाई ।
रामलखन अब शरण रामजू लेहु चरण लपटाई ॥

(४)

भजु मन राम नाम सुख माहीं ।
सुत सम्पति अरु नाम बड़ाई, राम नाम सम नाहीं ॥
शेष गणेश महेश आदि नित, धरत ध्यान जिन काहीं ।
रामलखन अब शरण रामजी, लेहु नाथ गहि बाहीं ॥

(५)

भजु मन दीन बन्धु रघुराई, है राम नाम सुखदाई ।
कलि मल ग्रसित जीव जग माहीं, है नहिं आन उपाई ॥
वेद पुराण भागवत गीता, राम नाम गति गाई ।
सुत सम्पति नारी सुख नाहीं, अन्त सङ्ग नहिं जाई ॥
राम लखन अब शरण रामजू, लेहु चरण लपटाई ।

(६)

भजु मन रामनाम दिन राती ।
राम नाम जिन्ह सुमिरण कीन्हेउ भये भुवन विख्याती ॥
ध्रुव प्रह्लाद गिद्ध गज गणिका, अमर नाम श्रुति गाती ।
वेद पुराण ऋषी मुनि गावत, जासु चरित दिन राती ॥
तासों विमुख सकल जग भ्रमिहौ, होइ न शीतल छाती ।
गृह सम्पति वनिता सुत नाती, ये नहिं होइँ सँघाती ॥
राम नाम मन निशिदिन पीजै, जैसे चातक स्वाती ।
रामलखन अब शरण रामजू बसहु हृदय दिन राती ॥

(७)

श्रीप्रमोदवन की झाँकी बनी अपूर्व स्वरूप वाकी ।
राम सिया सोहैं युग जोरी, सब शृङ्गार भयो एक ठोरी ॥
रामलखन सीता विचसोहैं, निरखत मुनिन केर मन मोहैं ।
माथे तिलक मुकुट सिर भ्राजै, देखत काम देव शत लाजै ॥
गल सोहै पुष्पन की माला, दरश पाय मुनि होयँ निहाला ।

ऊँच सिंहासन सोहै भारी, हनूमान हैं आज्ञाकारी ॥
रामलखन अब शरण विहारी, देहु भक्ति सन्तन हितकारी ।

(८)

बहुत दिन हरि सुमिरण बिनु खोये ।
परनिन्दा रस के रसना में निशदिन परे भिगोये ॥
तेल लगाय कियो अति मर्दन वस्त्रहिं मल मल धोये ।
तिलक लगाय चले स्वामी वन, विस्वन के मुख जोये ॥
सूरदास अब कहे कौन गति, उदर भरे पर सोये ।

(९)

मन पछितैहै अवसर बीते ।
दुर्लभ देह पाइ हरि पद भजु कर्म वचन अरु हीते ॥
सहस बाहु दश वदन आदि नृप बचे न काल बली ते ।
हम हम करि धन धाम सवाँरेउ अन्त चले उठि रीते ॥
सुत वनितादि जानि स्वारथ वश, न करु नेह समीते ।
अन्तहु तोहि तजहिं गे पामर, तू न तजत अब ही ते ॥
अब नाथहिं अनुराग जागु जड़, त्याग दुराशा जीते ।
बुझै न काम अगिनि तुलसी कह विषय भोग बहु घीते ॥

स्त्री-पुरुषादिकों के पालन करने-योग्य कुछ उपयोगी बातें

प्यारे भक्त जनों! यह मनुष्य शरीर बड़ा दुर्लभ है परन्तु है नाशवान्। भूख, प्यास, नींद, भय, भोगादि सभी योनियों को प्राप्त हैं परन्तु श्रीभगवद-भजन मानुष शरीर से ही सुलभ है, इसलिये प्रातः उठकर श्रीरामनाम कीर्त्तन, स्मरण, स्वरूप चिन्तन आदि करना सभी भक्तों का परम कर्त्तव्य है पुनः मनुष्य का आचार-विचार प्रथम धर्म है यथा "आचारः प्रथमो धर्मः", "अहिंसा परमो धर्मः", इस लिये शौचादिक क्रिया के लिये

जायँ तो लोटा दाहिने हाथ में लें, बायें हाथ से शौचादि इन्द्रियों को शुद्ध करके दाहिने हाथ में लोटा लेवें, बायें हाथ से लोटा व शरीरादि का स्पर्श न करें। शुद्ध मिट्टी दाहिने हाथ से लेकर लोटा में रख लें और नदी या तालाब पर जाकर मिट्टी किनारे रख कर लोटा में जल लेकर दूर जाकर ३ बार बायें हाथ को जल-मिट्टी से शुद्ध करके दाहिने व बायें चरण को शुद्ध करे पुनः बायें हाथ को शुद्ध कर दोनों हाथों को ४-४ बार मिट्टी लगाकर शुद्ध करें तब लोटा की शुद्धि करें। पुनः जल लेकर जलाशय से दूर कुल्ला व प्रभाती करें जल में कुल्ला आदि करना निषेध है। श्री गङ्गा जल को शौच में लेना दोष है, यदि लेना ही पड़े तो लोटा में जल लेकर आचमन कर लेवें, पुनः हो सके तो वस्त्र समेत मस्तक से स्नान करें नहीं तो कण्ठ या कमर से अवश्य स्नान करें।

नियमः—तेल लगाने के बाद, शौच जाने के बाद, बाल बनवाने के पश्चात्, मैथुन क्रिया के बाद, तथा शूकर, कूकर, गदहा, चाण्डाल को छूने के बाद एवं मृतक दाह क्रिया के पश्चात् अवश्य स्नान करके नया यज्ञोपवीत धारण कर लेना चाहिये। लघुशंङ्का (पेशाब) के बाद इन्द्रिय शुद्ध कर चार कुल्ला कर लेना चाहिये। नित्य स्नान के बाद धोती, लँगोटी धोकर पुनः हाथ शुद्ध करके आचमन आदि कर चन्दन से तिलक करें तत्पश्चात् श्री ब्रह्मगायत्री आदि का जप करके श्री सूर्य नारायण को जलाञ्जलि देकर श्री राम नाम या गायत्री आदि का जप करें। शीत निवारण के लिये रेशमी या ऊनी वस्त्र रक्खें पुनः स्थान में आकर श्री भगवान की सेवा-पूजा, पाठ तथा श्री राम नाम का जप करें पुनः श्रीभगवान की सेवा मानकर स्थान के सभी आवश्यक कार्य करने चाहिये। श्रीभगवत्प्रसाद पाते समय लोटा गिलास दाहिने हाथ की ओर रक्खें और बायें हाथ से लोटा का जल गिलास में लेकर दाहिने हाथ से पीवें। एक बार का पिया जल, पैर धोने से बचा जल, कूकर (श्वान) मूत्र के समान अशुद्ध माना जाता है मस्तक में साफी बाँधना निषेध है, पर उसको ओढ़ या कन्धे पर रख सकते हैं। भोजन के पश्चात् बायें

हाथ से लोटा तथा दाहिने हाथ से थाली या गिलास लेकर बाहर आचमन करें, जूठे हाथ से शरीर वस्त्र आदि को स्पर्श न करें। पुनः शुद्ध जल लेकर थाली गिलास आदि को शुद्ध करें। श्रीभगवान का प्रसादी पान लवङ्ग आदिक पा सकते हैं किन्तु तमाखू, बीड़ी आदि का पीना सर्वथा ही निषेध है* उस से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं, दाँत गन्दे हो जाते हैं। इस समय अधिकतर रोग डालडा घी, चाय, बीड़ी हिंसा व्यभिचार आदि के कारण होते हैं। यों तो दान, धर्म भी लोग बहुत करते हैं, परन्तु दूध में जल, और घृत में डालडा तथा असली में नकली वस्तुओं का मिलाना झूठ बोलना नहीं छोड़ते इसलिये—"रहे न कौड़ी पाप की ज्यों आवे त्यों जाय" अन्यायोपार्जित द्रव्य बीमारी या घूस में जाता है। रजस्वला स्त्री के हाथ का स्पर्श किया हुआ अन्न व जल का सेवन करना तीन दिनों तक महानिषेध है परन्तु अब इस मर्यादा को भी मानने वाले लोग कम ही हैं। हिन्दूधर्म का अब दिनानुदिन ह्रास होता रहा है। अब बहुत से लोग शिखा-रखने तथा चन्दन लगाने व बड़ों को दण्डवत् प्रणाम करने में भी लज्जा करते हैं इत्यादि।

* श्लोक—तमाखूभङ्गमद्यानि ये पिवन्ति नराधमाः।
तेषां हि नरके वासो यावद्ब्रह्मा चतुर्मुखः॥
कर्णेऽपश्च तमालश्च पुच्छाद्गोभी बभूव ह।
रुधिरान्मेंहदी जाता तस्मा देतत्त्रयं त्यजेत्॥
विजया कल्पमेकं तु दशकल्पन्तु नागिनी।
वारुणी कल्पसाहस्रं धूम्र सङ्ख्या न विद्यते॥
ब्राह्मणा-क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्च मुनिसत्तम।
श्वपचैः सदृशा ज्ञेयास्तमाखूपानमात्रतः॥
(स्कन्धपुराण)

धूम्रपानरतं विप्रं दामं कुर्वन्ति ये नराः।
दातारो नरकं यान्ति ब्राह्मणा ग्रामशूकराः॥
(पद्मपुराण)

एक समय श्रीकृष्ण चन्द्रजी कल्पवृक्ष लेने के लिये स्वर्ग लोक को गये, वहाँ इन्द्र की ओर से कामधेनु और श्रीकृष्ण चन्द्रजी की ओर से गरुड़ देव में युद्ध हुआ। गरुड़ जी ने कामधेनु के कान व पुच्छ काट लिये अतः कान से तमाखू की उत्पत्ति हुई और पूछ से गोभी तथा रुधिर से मेहँदी, लाल तरबूजा, टमाटर, मसूर, लालभाजी की उत्पत्ति हुई, इसी से प्रथम इन सभी वस्तुओं का सन्त लोग भगवान को भोग नहीं लगाते थे इसी प्रकार शलजम, गाजर, कुन्दरू, प्याज, लहसुन मूरी, बैंगन, भाण्टा, कैथा, गोंद, हींग, नलका जल, डाल्डा घी, शोडा, सिलवर का पात्र, ऊर्ध्व-वस्त्र कमीच, बनियानी पायजामा आदिका शास्त्र में निषेध है। इन सबों का प्रचार मुसलमानी, राजकाल से भारत देश में देखा-देखी होने लगा। इस समय साधु समाज में भी गाँजा, भाँग, अफीम, हलवाई के यहाँ की जलेबी, लड्डू, चाय, बिना धोये गेहूँ अन्न आदिका सेवन होने लगा है। लोटा-व हाथ तो बहुत मलते हैं, परन्तु पैर का जूता मैला-कुचैला ही पहन कर चले आते हैं इत्यादि।

दोहा—माया के परपञ्च में, वृथा पड़ा है चित्त।
समझाये समझे नहीं, कथा सुनत है नित्त॥

दोहा—कृष्ण उठाये गिरिवरहि, राम बँधाये सेतु।
शङ्करजी ने विष पिया, भक्त जनन के हेतु॥ १॥

चौपाई।

सोलह सहस रानि गृह माहीं * गये कृष्ण एक सङ्ग सब पाहीं॥
क्षणमँह सबहिं मिले भगवाना * उमा मर्म यह काहु न जाना॥
भानु कृशानु सर्व रस खाहीं * तिन्ह कहँ मन्द कहत कोउ नाहीं॥
समरथ कहँ नहिं दोष गोसाईं * रवि पावक सुरसरि की नाईं॥

दोहा—जो नर ईर्ष्या करहिं अस, जड़ बिवेक अभिमान।
परहिं नरक महँ कल्प शत, जीव कि ईश समान॥ २॥

तुलसी यहि संसार में, ले नहिं जन्मत कोई।
वैर प्रीति अभ्यास बश, होत होत ही होई॥ ३॥

श्लोक—आगमी ऽपः प्रजा देशः कालः कर्म च जन्म च।
ध्यानं मन्त्रों ऽथ संस्कारो दशैते गुणहेतवः॥

अर्थ—शास्त्र जल, प्रजा देश, समय, कर्म, जन्म, ध्यान, मन्त्र और संस्कार ए दश वस्तुयें यदि सात्विक होयँ तो सत्व गुण उत्पन्न होयँ, राजस होयँ तो रजो गुण और यदि तामस होयँ तो तमोगुण की वृद्धि होती है इसी से श्रीभगवान के लीला चरित्र श्रीरामायण तथा गीतादि का ही पाठ करें तथा श्रीसरयू जल, गङ्गाजल व श्रीभगवत् चरणोदक आदि का ही पान करें एवं श्रीभगवत-भागवत-प्रसाद का ही सेवन करें और श्रीचित्रकूट आदि तीर्थों में ही वास करें। एकादशी आदि व्रत, सत्य, सन्तोष, ब्रह्मचर्य, अहिंसा, आदि धर्म का पालन करें। एवं प्रत्येक समय श्रीराम नाम कीर्त्तन-स्मरण पूर्वक भगवत-भागवत-परिचर्या रूपी महत्कर्म सदैव करते रहना चाहिये।

माता सीता कृपामूर्त्तिः पिता रामोऽखिलेश्वरः।
बान्धवो रामभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम्॥

श्रीसीतारामसङ्कीर्त्तनः—

जय रघुपति जन मन हारी, सीताराम सीताराम।
जय दशरथ अजिर बिहारी, सीताराम सीताराम॥
श्याम शरीर मुकुट सिर सोहै, पीताम्बर लखि मुनि मन मोहै।
जय जय अवध बिहारी, सीताराम सीताराम॥
भूमि भार के टारन हारे, कौशल्या के लोचन तारे।
धनुष वाण कर धारी, सीताराम सीताराम॥
विश्वामित्र यज्ञ रखवारे, गोतम तिय के तारन हारे।
भक्त जनन सुख कारी, सीताराम सीताराम॥

तोरेउ धनुष शम्भु को भारी, सिय जयमाल हरषि उरधारी ।
सुर नर मुनि हित कारी, सीताराम सीताराम ॥
केवट से प्रभु चरण धुलाये, भक्त गिद्ध निज धाम पठाये ।
करुणासिन्धु खरारी, सीताराम सीताराम ॥
बेर भिल्लनी के अति भाये, परम प्रेम से प्रभु ने पाये ।
ऐसे प्रेम पुजारी, सीताराम सीताराम ॥
दीन सुकण्ठ मित्र प्रभु कीन्हे, बाली मारि धाम निज दीन्हे ।
भक्तन के भयहारी, सीताराम सीताराम ॥
भक्त विभीषण शरण में आये, रावण बधि लङ्केश बनाये ।
दीनबन्धु असुरारी, सीताराम सीताराम ॥
राजसिंहासन शोभित कीन्हें, पुरवासिन को अति सुख दीन्हे ।
जय साकेत बिहारी, सीताराम सीताराम ॥
अब करुणामय करुणा कीजै, दीन जनन को यह वर दीजै ।
पावें भक्ति तुम्हारी, सीताराम सीताराम ॥
जे जन प्रभु के नित गुण गावें, उनके मानस में हरि आवें ।
होय हृदय सुख भारी, सीताराम सीताराम ॥

दोहा—राम राम सब कोइ कहे, ठग ठाकुर अरु चोर ।
बिना प्रेम रीझैं नहीं, सीतापति चित चोर ॥ १ ॥

इति शुभम्

लेखक एवं संगृहीता—श्रीवैष्णव श्रीरामसखेन्द्र निध्याचार्य्यवंशोद्भव श्रीस्वामी रामकुमारशरण कृपापात्र रामलखनशरण प्रमोदवन, श्रीचित्रकूट ।

श्रीसीतारामार्पणमस्तु ।

श्रीकिशोरीजी की जय

—:(०):—

श्री किशोरी जी की जय

शुभ-सन्देश

प्रेमियों का परम-धन

श्री जानकी-चरितामृत

दोहा—हिन्दी भाषा युक्त यह, सिय चरणामृत तात ।
सर्वसुखद, कल्याण कर, केहि सुमतिहिं न सुहात ॥ १ ॥

नाम-रूप-लीलादि युत, जो चह सिय-पद-प्रेम ।
पढ़े सुने सो जानकी, चरितामृत कर नेम ॥ २ ॥

निमि कुल की वंशावली, मिथिला धाम-महत्व ।
नाम-रूप-गुण-गण सहित, सीता-दिव्य परत्व ॥ ३ ॥

महि द्वारा प्राकट्य सों, शुभ विवाह-पर्यन्त ।
हृदय भाव उमड़ावनी, सिय-लीला बिलसन्त ॥ ४ ॥

सहस-नाम सह जानकी, अष्टोत्तर शत-नाम ।
अष्टयाम-सेवादि सुख, विषय अनेक ललाम ॥ ५ ॥

इस चरितामृत ग्रन्थ में, वर्णित युत विस्तार ।
तासों देखन योग्य यह, सब ग्रन्थन को सार ॥ ६ ॥

सीय-उपासक जनन हित, यहि सम सुखद न आन ।
जनकलली-पद-रति-जनक, पढ़िहहिं सुनहिं सुजान ॥ ७ ॥

जनकलली की देन यह, हिरदय से अपनाय ।
पूर्ण मनोरथ होइये, निःसन्देह सुभाय ॥ ८ ॥

अष्टोत्तर अध्याय शत, का यह ग्रन्थ पुनीत ।
पढ़े, सुनै, हिरदय धरे, ले रघुवर को जीत ॥ ९ ॥

पृष्ठ संख्या १३५०

ग्रन्थ-प्राप्तिस्थानः—

१—पं० श्री राम नारायण लाल शर्मा, श्रीनिवास (बङ्गला नं० १९) केण्टून्मेण्ट, फैजाबाद (उ० प्र०)

२—पं० श्री राम दुलारी शरण जी महाराज, सुन्दरसदन, अग्निकुण्ड, श्री जनकपुर धाम (बिहार)

३—श्री सीताराम शरण जी कीर्त्तनिया, श्री चन्द्रकला कुञ्ज, लोहा बाजार सीतामढ़ी, जि० मुजफ्फरपुर (बिहार)

४—श्री बद्री प्रसाद जी सर्राफ, सदरबाजार, लखनऊ

सर्वेश्वरी श्री किशोरी जी की जय

❀ स्वास्थ्य सम्बन्धी पुस्तकें ❀

हड़ और उसके सौ उपयोग	...	४)५० पै०
अदरक, सोंठ, हल्दी, पीपल	...	३)
अंगूर, अनार, सेब, संतरा	...	२)५० पै०
मांस व अंडे के गुण और दोष	...	२)५० पै०
पपीता, केला, अमरूद, शरीफा	...	३)
अमृतफल आँवला	...	२)५० पै०
चाय के गुण और दोष	...	४)
जौ और उसके सौ उपयोग	...	३)६० पै०
डाक्टर तुलसी	...	२)५० पै०
डाक्टर आम	...	२)५० पै०
डाक्टर गन्ना	...	२)५० पै०
डाक्टर जल	...	२)५० पै०
डाक्टर त्रिफला	...	२)५० पै०
डाक्टर गेहूँ और डाक्टर चना	...	२)५० पै०
डाक्टर शहद	...	३)
डाक्टर बेल	...	२)५० पै०
नींबू और उसके सौ उपयोग	...	२) ५० पै०
प्याज के उपयोग	...	२)५० पै०
दूध और दूध से बनी चीजें	...	३)
नमक के गुण और दोष	...	२)५० पै०
टमाटर, करैला, बैंगन, परवल	...	२)५० पै०
नीम और उसके सौ उपयोग	...	२)५० पै०
डाक्टर दूध	...	४)
मिट्टी चिकित्सा	...	२)५० पै०
मूली, गाजर, शलजम, चुकन्दर	...	३)
लहसुन के उपयोग	...	२)५० पै०
सूखे मेवे	...	२)५० पै०
सोयाबीन	...	२)५० पै०
तम्बाकू के गुण और दोष	...	२)५० पै०

तेजकुमार बुकडिपो (प्रा०) लिमिटेड,

पोस्ट बाक्स ८५, १—त्रिलोकनाथ रोड, लखनऊ—२२६००१